



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 100]

नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 19, 2000/आषाढ़ 28, 1922

No. 100]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JULY 19, 2000/ASADHA 28, 1922

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण

अधिसूचना

नई दिल्ली, 14 जुलाई, 2000

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (भारतीय बीमा कंपनी रजिस्ट्रीकरण) विनियम, 2000

फा. सं. बी. वि. वि. प्रा./रजि/7/2000.— प्राधिकरण, बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) की धारा 26 के साथ पठित, बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) की धारा 114क द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, बीमा मलहकार समिति के परामर्श से निम्नलिखित विनियम बनाता है, अर्थात् :-

अध्याय 1

1 संक्षिप्त नाम और प्रारंभ—(1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (भारतीय बीमा कंपनी रजिस्ट्रीकरण) विनियम, 2000 है।

(2) ये राजपत्र में उनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं— इन विनियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो

(क) "अधिनियम" से बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) और बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) अभिप्रेत है;

(ख) "प्राधिकरण" से बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) की धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन स्थापित बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अभिप्रेत है;

(ग) "प्रमाणपत्र" से प्राधिकरण द्वारा इन विनियमों के अधीन प्रदत्त और नवीकृत रजिस्ट्रेशन का प्रमाणपत्र अभिप्रेत है;

(घ) "जांच अधिकारी" से प्राधिकरण का कोई अधिकारी या उसके द्वारा विनिर्दिष्ट रूप से इन विनियमों के प्रबन्धन के लिए जांच करने के लिए नियुक्त कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

(ङ) "साधारण वार्षिकी कारबार" से मानव जीवन के संबंध में वार्षिकी देने के लिए संविदा प्रभावी करने का कारबार अभिप्रेत है किन्तु इसके अन्तर्गत पेन्शन कारबार के अधीन संविदा नहीं है;

(च) "स्वास्थ्य बीमा कारबार" या "स्वास्थ्य रक्षण" से ऐसी संविदाएं प्रभावी करना अभिप्रेत है, जो रुग्णता प्रसुविधाओं या चिकित्सीय, शल्य या अस्पताल व्यय प्रसुविधाओं, चाहे अन्तः रोगी या बहिरंग रोगी हो, क्षतिपूर्ति पर प्रतिपूर्ति, सेवा, पूर्व-संदत्त, अस्पताल या कोई अन्य योजना आधार, जिसके अन्तर्गत बीमाकृत प्रसुविधाएं और दीर्घकालिक देखभाल भी हैं, को व्यवस्था करती हैं;

(छ) "भारतीय संप्रवर्तक" से निम्नलिखित अभिप्रेत हैं और उसके अन्तर्गत हैं—

(i) कोई कम्पनी, जो कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) के अधीन बनाई गई है और जो उस अधिनियम की धारा 4 में परिभाषित समनुषंगी नहीं है;

(ii) कोई ऐसी बैंककारी कंपनी, जो अधिनियम की धारा 2 की उपधारा (4क) में परिभाषित है किन्तु इसके अन्तर्गत भारत में कार्य करने वाला विदेशी बैंक या उसकी शाखा नहीं है;

(iii) कोई लोक वित्तीय संस्था, जो कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 4क में परिभाषित है;

(iv) कोई सोसायटी, जो तत्समय प्रवृत्त किसी सुसंगत विधि के अधीन रजिस्ट्रकृत है;

(v) कोई व्यक्ति, जो भारतीय नागरिक है या व्यक्तियों का कोई समूह, जो भारतीय नागरिक हैं।

(ज) "अवसंरचना सुविधा" से निम्नलिखित अभिप्रेत हैं :-

(i) कोई सड़क, राजमार्ग, पुल, विमानपत्तन, पत्तन, रेल, जिसके अन्तर्गत बी ओ एल टी, सड़क परिवहन प्रणाली, जल प्रदाय परियोजना, सिंचाई परियोजना, औद्योगिक पार्क, जल उपचार संयंत्र, ठोस अपशिष्ट प्रबंध प्रणाली, स्वच्छता और मल वहन प्रणाली भी है;

(ii) विद्युत उत्पादन, वितरण या पारेषण;

(iii) दूर संचार;

(iv) आवासन परियोजना;

(v) इसी प्रकृति की कोई अन्य लोक सुविधा, जो इस निमित्त प्राधिकरण द्वारा राजपत्र में अधिसूचित की जाए;

(झ) "सहबद्ध कारबार" से ऐसी जीवन बीमा संविदाएं या स्वास्थ्य बीमा संविदाएं अभिप्रेत हैं, जिनके अधीन सुविधाएं, पूर्णतः या भागतः उसके अधीन आस्तियों के मूल्य या किसी अनुमोदित सूचकांक के निर्देश से निर्धारित की जाती हैं;

(अ) "असहबद्ध कारबार" से ऐसी जीवन बीमा संविदाएं या स्वास्थ्य बीमा संविदाएं अभिप्रेत हैं, जो सहबद्ध कारबार नहीं हैं;

(ट) "पेन्शन कारबार" के अन्तर्गत पेंशन निधियों के त्रिनिधानों या अधिवार्षिता स्कीमों या वार्षिकियों के संदाय के लिए संविदाएं, जो इस निमित्त प्राधिकरण द्वारा अनुमोदित की जाएं, के प्रबंध के लिए संविदाएं प्रभावी करने का कारबार है;

(ड) "प्रधान अधिकारी" से कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो आवेदक के प्रबंध-तंत्र से संबंधित है, या कोई अन्य व्यक्ति, जिसको प्राधिकरण ने अपने प्रधान अधिकारी के रूप में उसे माने जाने के अपने आशय की सूचना उसे तामील कर दी है;

(ड) इसमें प्रयुक्त सभी शब्दों और पदों का वही अर्थ है जो उनका बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) या बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) में परिभाषित है या क्रमशः उन अधिनियमों में उनका है।

अध्याय 2

3. रजिस्ट्रिकरण के लिए प्रक्रिया—(1) भारत में बीमा कारबार चलाने की बांछा करने वाला आवेदक, प्ररूप बी वि वि प्रा/द1 में रजिस्ट्रिकरण आवेदन को अध्यपेक्षा करेगा।

(2) कोई आवेदक, जिसकी रजिस्ट्रिकरण आवेदन की अध्यपेक्षा प्राधिकरण ने स्वीकार कर ली है, प्ररूप बी वि वि प्रा/द2 में आवेदन करेगा।

4. बीमा कारबार के वर्ग, जिनके लिए रजिस्ट्रिकरण आवेदन की अध्यपेक्षा की जा सकती है—(1) आवेदक बीमा कारबार के प्रत्येक वर्ग के लिए विनियम 3 के अधीन रजिस्ट्रिकरण आवेदन के लिए पृथक अध्यपेक्षा करेगा।

(2) वे बीमा कारबार के वर्ग, जिनके रजिस्ट्रिकरण आवेदन के लिए अध्यपेक्षा की जा सकेगी, निम्नलिखित हैं :-

(क) जीवन बीमा कारबार, जिसके अन्तर्गत सहबद्ध कारबार, असहबद्ध कारबार या दोनों हैं;

(ख) साधारण बीमा कारबार, जिसके अंतर्गत स्वास्थ्य बीमा कारबार (या स्वास्थ्य रक्षण) है।

5. रजिस्ट्रिकरण आवेदन के लिए अध्यपेक्षा—(1) कोई आवेदक, विनियम 3 के उपविनियम (1) में निर्दिष्ट अध्यपेक्षा के लिए आवेदन पात्र होगा, यदि ऐसा आवेदक रजिस्ट्रिकरण होने पर अधिनियम की धारा 2(7क) में यथा परिभाषित भारतीय बीमा कंपनी होगी :

परन्तु यह कि ऐसा आवेदक जिसकी—

(i) रजिस्ट्रिकरण आवेदन के लिए अध्यपेक्षा, रजिस्ट्रिकरण आवेदन के लिए अध्यपेक्षा की तारीख को पूर्ववर्ती पांच वित्तीय वर्षों के दौरान किसी भी समय प्राधिकरण द्वारा नामंजूर की है, या

(ii) रजिस्ट्रिकरण के लिए आवेदन, रजिस्ट्रिकरण आवेदन के लिए अध्यपेक्षा की तारीख को पूर्ववर्ती पांच वित्तीय वर्षों के दौरान किसी भी समय प्राधिकरण द्वारा नामंजूर की है, या

(iii) प्राधिकरण द्वारा रजिस्ट्रिकरण का प्रमाणपत्र रद्द कर दिया है या वापस ले लिया है; या

(iv) नाम में "बीमा कंपनी" या "बीमा कंपनी" नहीं है;

इस विनियम के अधीन रजिस्ट्रिकरण आवेदन के लिए अध्यपेक्षा करने के लिए पात्र नहीं होगा।

(2) प्रत्येक रजिस्ट्रिकरण आवेदन की अध्यपेक्षा के साथ निम्नलिखित होंगे

(क) संगम ज्ञापन और संगम अनुच्छेद की एक प्रमाणित प्रति, जहां आवेदक एक कंपनी है और कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) के अधीन निर्गमित है;

(ख) निदेशकों और प्रधान अधिकारियों का नाम, पता और आर्जाविका;

(ग) चलाए जाने वाले प्रस्तावित बीमा कारबार के वर्ग का एक विवरण;

(घ) उन स्रोतों को दर्शित करने वाला एक विवरण, जो अधिनियम की धारा 6 के अधीन अपेक्षित शेयर पूंजी में अभिदाय करेंगे।

6. अतिरिक्त जानकारी और स्पष्टीकरण, आदि को प्रस्तुत करना—(1) प्राधिकरण उस आवेदक से, जो विनियम 3 के अधीन अध्यपेक्षा करता है, रजिस्ट्रीकरण आवेदन की अध्यपेक्षा पर विचार करने के लिए सुसंगत विषयों के संबंध में अतिरिक्त जानकारी या स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने की मांग कर सकेगा।

(2) विनियम 5 के उपविनियम (1) में निर्दिष्ट आवेदक, यदि ऐसी अपेक्षा हो तो प्राधिकरण के प्रधान अधिकारी के माध्यम से प्राधिकरण के समक्ष उपस्थित हो सकेगा।

7. रजिस्ट्रीकरण आवेदन की अध्यपेक्षा पर विचार—प्राधिकरण अपना यह समाधान हो जाने पर कि—

(क) प्ररूप बी वि वि प्रा/द1 में अध्यपेक्षा सभी प्रकार से पूर्ण है और उसमें अपेक्षित सभी दस्तावेज उसके साथ संलग्न हैं;

(ख) प्ररूप बी वि वि प्रा/द1 में दी गई सभी जानकारी सही है;

(ग) आवेदक बीमा कारबार के बारे में सभी कार्य करेगा, जिसके अन्तर्गत उसके अपने संगठन में विनिधानों का प्रबंध भी सम्मिलित है;

(घ) रजिस्ट्रीकरण आवेदन के लिए अध्यपेक्षा प्रस्तुत करने वाला आवेदक—

(i) अधिनियम की धारा 3 के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए सद्भाविक आवेदक है;

(ii) प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए सभी अध्यपेक्षाओं का अनुपालन करने की स्थिति में है;

अध्यपेक्षा को स्वीकार कर सकेगा और आवेदक को रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन का प्रदाय करने के लिए निर्देश दे सकेगा।

8. रजिस्ट्रीकरण आवेदन की अध्यपेक्षा को नामंजूर करना—(1) प्राधिकरण, जहां विनियम 7 के अधीन अध्यपेक्षाओं का अनुपालन नहीं किया गया है, आवेदक को सुनवाई का समुचित अवसर देने के पश्चात्, आवेदन को नामंजूर कर सकेगा।

(3) उपविनियम के अधीन प्राधिकरण के विनिश्चय से व्यथित कोई आवेदक, ऐसी संसूचना की तारीख से तीस दिन के भीतर, प्राधिकरण को अपने विनिश्चय पर पुनर्विचार करने के लिए आवेदन कर सकेगा।

(4) प्राधिकरण, उपविनियम (3) के अधीन किए गए आवेदन पर विचार करेगा और आवेदक को यथासंभव शीघ्र लिखित में अपना विनिश्चय संसूचित करेगा।

9. अध्यपेक्षा के लिए आवेदक को नामंजूर करने पर कार्रवाई—आवेदक, जिसकी रजिस्ट्रीकरण आवेदन की अध्यपेक्षा नामंजूर की गई है, मूलतः प्रस्तावित वर्ग से भिन्न बीमा कारबार के संप्रवर्तकों के नए सेट और/या किसी वर्ग के साथ नामंजूर करने की तारीख से दो वर्ष की अवधि के पश्चात् रजिस्ट्रीकरण आवेदन के लिए नए सिरे से अनुरोध के साथ प्राधिकरण से संपर्क कर सकेगा।

अध्याय 3

10. रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन—कोई ऐसा आवेदक, जिसकी अध्यपेक्षा स्वीकार कर ली गई है, प्ररूप बी वि वि प्रा/द2 में रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए आवेदन कर सकेगा।

(2) प्रत्येक आवेदन के साथ निम्नलिखित होंगे—

(क) अधिनियम की धारा 7 के अधीन अपेक्षित निक्षेप करने के सबूत का दस्तावेजी साक्ष्य;

(ख) समादन शेयर पूंजी एक सौ करोड़ रुपए या उससे अधिक होने का साक्ष्य, यदि आवेदन जीवन बीमा कारबार या साधारण बीमा कारबार प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए है;

(ग) समादत्त शेयर पूंजी दो सौ करोड़ रुपए या उससे अधिक होने का साक्ष्य, यदि आवेदन पुनर्बीमा कारबार का प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए है;

(घ) प्रधान अधिकारी और आवेदक के संप्रवर्तक द्वारा शपथ पत्र, जिसमें इस आशय को प्रमाणित करते हुए कि अधिनियम की धारा 6 के पहले परंतुक की इन अपेक्षाओं का कि कंपनी के बनाने और उसके रजिस्ट्रीकरण में उपगत किन्हीं प्रारंभिक व्ययों को अपवर्जित करने के पश्चात् समादत्त शेयर पूंजी और अधिनियम की धारा 7 के अधीन किया जाने वाला अपेक्षित व्यय पर्याप्त है, इस बात का समाधान हो गया है।

(ङ) आवेदक की शेयर पूंजी के बारे में प्रत्येक संप्रवर्तक और शेयरधारक को जारी किए गए शेयरों का सुभिन्नक संख्यांक दर्शित करने वाला विवरण;

(च) प्रधान अधिकारी और आवेदक के संप्रवर्तकों द्वारा यह प्रमाणित करते हुए शपथ पत्र कि अधिनियम की धारा 2 के खंड (7क) के उपखंड (ख) में निर्दिष्ट समादत्त साधारण पूंजी विनियम 11 के अनुसार गणित है और छब्बीस प्रतिशत से अधिक नहीं है;

(छ) प्रकाशित प्रास्पेक्ट्स, यदि कोई है, की प्रमाणित प्रति;

(ज) बीमाकर्ता के मानक प्ररूपों, बीमाकृत दरों, फायदों, बीमा पालिसियों के बारे में प्रस्थापित किए जाने वाले निबंधनों और शर्तों के विवरणों की एक प्रमाणित प्रति, साथ ही जीवन बीमा कारबार की दशा में किसी बीमांकक का यह प्रमाणपत्र कि ऐसी दरें, फायदे, निबंधन और शर्तें व्यावहारिक और ठीक हैं;

(झ) भारतीय संप्रवर्तक और विदेशी संप्रवर्तक, यदि कोई हो, के बीच और संपूर्ण संप्रवर्तकों के बीच हुए सहमति ज्ञापन की प्रमाणित प्रति, जिसके अन्तर्गत पक्षकारों के बीच समर्थन राहत पत्रों का आदान-प्रदान भी है;

(ञ) किसी वर्ग के कारबार के लिए पचास हजार रुपए की फीस के संदाय को दर्शित करने वाली मूल रसीद;

(ट) यह प्रमाणित करते हुए किसी व्यवसाय कर रहे चार्टर्ड अकाउंटेंट या व्यवसाय कर रहे कंपनी सचिव से प्रमाणपत्र कि आवेदक ने रजिस्ट्रकरण फीस, शेयर पूंजी, निक्षेपों से संबंधित सभी अपेक्षाओं का और अधिनियम की अन्य अपेक्षाओं का आवेदक द्वारा पालन कर लिया है;

(ठ) कोई अन्य जानकारी, जो प्राधिकरण द्वारा रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन पर कार्रवाई करने के दौरान मांगी जाए।

11. विदेशी कंपनी द्वारा धारित छब्बीस प्रतिशत साधारण पूंजी की गणना करने की रीति—(1) इस अधिनियम और इन विनियमों के प्रयोजनों के लिए विदेशी कम्पनी द्वारा या तो स्वयं या उसकी समनुषंगी कंपनियों या उसकी आवेदक कंपनी में उसके नामनिर्देशिती (इसके पश्चात् विदेशी विनिधानकर्ता कहा गया है) के माध्यम से साधारण शेयरों की धारिता की गणना निम्नानुसार की जाएगी और निम्नलिखित का सकल होगी:—

(i) विदेशी कंपनी द्वारा या तो स्वयं या अपनी समनुषंगी या आवेदक कंपनी में नामनिर्देशिती के माध्यम से धारित समादत्त शेयर पूंजी की मात्रा;

(ii) आवेदक कंपनी में अन्य विदेशी विनिधाकताओं, और बहुराष्ट्रीय अधिकरणों द्वारा धारित समादत्त शेयर पूंजी की मात्रा;

(iii) समादत्त शेयर पूंजी के उस अनुपात द्वारा दर्शित मात्रा का वह अनुपात, जो विनियम 2 के खंड (छ) के उपखंड (i) में उल्लिखित भारतीय संप्रवर्तक कंपनी की कुल पुरोधृत साधारण पूंजी का है और जो इस उपविनियम के उपखंड (i) और (ii) में उल्लिखित व्यक्तियों के प्रवर्ग द्वारा धारित या नियंत्रित है।

स्पष्टीकरण—उपर्युक्त निर्दिष्ट गणना के प्रयोजन के लिए, आवेदक और उसकी समनुषंगी और नामनिर्देशियों के विदेशी संप्रवर्तक से भिन्न, विदेशी संस्थागत विनिधानकर्ताओं द्वारा धारित भारतीय संप्रवर्तक कंपनी में पूंजी की धारिताओं को संस्थागत

विनिधानकर्ताओं के विनिधान के विस्तार तक, और जो भारतीय पारस्परिक प्रतिभूति और एक्सचेंज बोर्ड द्वारा अपने नियमों, विनियमों या जारी किए गए मार्गदर्शन सिद्धांतों द्वारा अधिकथित अनुमोदित सीमाओं के भीतर हैं।

(2) प्रत्येक बीमाकर्ता, जिसे अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण प्रदान कर दिया है, प्रत्येक तीन मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर अपनी कंपनी के और संप्रवर्तक के शेयरों की धारिता में पुरोधृत पूंजी के 1% से अधिक परिवर्तनों को दर्शित करते हुए प्राधिकरण को एक विवरण प्रस्तुत करेगा।

(3) निर्वचन : इस विनियम का निर्वचन प्राधिकरण द्वारा किया जाएगा, जिसका विनिश्चय सभी मामलों में सभी आवेदकों/बीमाकर्ताओं पर आबद्ध कर होगा और अंतिम होगा।

12. आवेदन पर विचार- (1) प्राधिकरण, आवेदक द्वारा बीमा कारबार चलाए जाने से संबंधित सभी बातों को प्रमाणपत्र के अनुदान के लिए विचार करते समय हिसाब में लेगा।

(2) अपनी स्वतंत्रता को किसी रीति से प्रभावित किए बिना, विशिष्टता और पूर्वगामी व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, प्राधिकरण आवेदक को प्रमाणपत्र के अनुदान के लिए निम्नलिखित विषयों पर विचार करेगा, अर्थात्:-

(क) उस कारबार/वृत्ति के क्षेत्रों में संप्रवर्तक में से प्रत्येक के कार्य के अभिलेख, जिसमें वे लगे हुए हैं;

(ख) संप्रवर्तक और आवेदक के प्रबंध-तंत्र में निदेशकों और व्यक्तियों के कार्य का अभिलेख;

(ग) आवेदक कंपनी का पूंजी ढांचा;

(घ) ग्रामीण सेक्टर में निवास करने वाले व्यक्तियों, असंगठित सेक्टर के कर्मचारों, अनौपचारिक सेक्टर, आर्थिक रूप से मध्य या समाज के पिछड़े वर्गों और प्राधिकरण द्वारा विनिर्दिष्ट व्यक्तियों के अन्य प्रवर्गों को जीवन बीमा या साधारण बीमा पालिसियां की व्यवस्था करने के दायित्व के विस्तार तक;

(ङ) बीमा उत्पादों की प्रकृति;

(च) आवेदक कंपनी की योजनागत अवसंरचना जिसके अंतर्गत बीमा कारबार को प्रभावी रूप से चलाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में शाखाएं भी हैं;

(छ) आवेदक कंपनी के प्रबंध-तंत्र के भीतर बीमांकक और अन्य वृत्तिक विशेषज्ञता का सार;

(ज) विनियम 7(ग) की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए आवेदक का संगठन ढांचा;

(झ) अधिनियम के उपबंधों को कार्यान्वित करने के लिए अन्य सुसंगत विषय।

(3) प्राधिकरण उन आवेदकों को रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र के अनुदान में वरीयता देगा, जिनका, व्यष्टियों या व्यष्टियों के समूहों को स्वास्थ्य रक्षण देने के कारबार को चलाए रखने का प्रस्ताव है।

13. रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन को नामंजूर करना- (1) जहां रजिस्ट्रीकरण के लिए कोई आवेदन सभी प्रकार से पूर्ण नहीं है और प्ररूप बी वि प्रा/द2 में विनिर्दिष्ट विनियमों या अनुदेशों के अनुरूप नहीं है, और विनियम 12 और 16 में निर्दिष्ट विषयों पर विचार करने के पश्चात् तथा यह समाधान हो जाने पर कि प्राधिकरण द्वारा प्रमाणपत्र अनुदान करना वांछनीय नहीं, वहां प्राधिकरण आदेश द्वारा आवेदन को नामंजूर कर सकेगा।

(2) उपविनियम (1) के अधीन आवेदन को नामंजूर करने वाला आदेश, उन आधारों को, जिन के लिए आवेदन नामंजूर किया गया है, लिखित में कथित करते हुए आवेदकों को ऐसे नामंजूर करने के तीस दिन के भीतर प्राधिकरण द्वारा संसूचित किया जाएगा।

(3) उपविनियम (2) के अधीन प्राधिकरण के विनिश्चय से व्यथित कोई आवेदक ऐसी सूचना को तारीख से तीस दिन की अवधि के भीतर अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (2ग) के अनुसार पुनर्विचार के लिए केन्द्रीय सरकार को अपील कर सकेगा।

(4) ऐसी अपील पर केन्द्रीय सरकार का विनिश्चय अंतिम होगा और किसी भी न्यायालय के समक्ष प्रश्नगत नहीं होगा।

(5) विनियम 10 के उपविनियम (2) के खंड (ब) में निर्दिष्ट फीस का प्रतिसंदाय किया जाएगा।

14. रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन के नामंजूर करने का प्रभाव-कोई आवेदक, जिसका आवेदन रजिस्ट्रीकरण के लिए नामंजूर किया गया है, किसी प्रमाणपत्र के लिए हकदार नहीं होगा।

कोई आवेदक, नामंजूरी की तारीख से दो वर्ष की अवधि के पश्चात् रजिस्ट्रीकरण के लिए प्राधिकरण को नये सिरे से अनुरोध कर सकेगा, जो मूल रूप से प्रस्तावित बीमा कारबार के वर्ग से भिन्न संप्रवर्तकों के एक नए सेट और या बीमा कारबार के वर्ग के साथ होगा।

15. रजिस्ट्रीकरण के लिए फीस के संदाय की रीति-कारबार के प्रत्येक वर्ग के रजिस्ट्रीकरण के लिए पचास हजार रुपये की फीस नई दिल्ली में संदेय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण के पक्ष में किसी अनुसूचित बैंक द्वारा जारी किए गए बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजी जाएगी।

16. रजिस्ट्रीकरण के प्रमाणपत्र का अनुदान-प्राधिकरण, ऐसी जांच करने के पश्चात् जो वह ठीक समझे और यह समाधान हो जाने पर कि-

(क) आवेदक पात्र है और उसकी राय में अधिनियम के अधीन अधिरोपित अपने दायित्वों को प्रभावी रूप से पूरा कर सकेगा;

(ख) आवेदक की वित्तीय स्थिति और प्रबंध-तंत्र का साधारण स्वरूप ठीक है;

(ग) आवेदक को उपलब्ध संभावित कारबार की मात्रा और उसका पूंजी ढांचा तथा उपार्जन की संभावनाएं पर्याप्त हैं;

(घ) साधारण जनता के हितों की पूर्ति होगी, यदि आवेदन में विनिर्दिष्ट बीमा कारबार के वर्ग के बारे में आवेदक को प्रमाणपत्र अनुदत्त किया जाता है; और

(ङ) आवेदक ने धारा 2ग, 5, 31क, 32 और 32क के उपबंधों का अनुपालन किया है और उसने उसको लागू इन धाराओं की सभी अपेक्षाओं को पूरा किया है।

कारबार के उस वर्ग के लिए बीमाकर्ता के रूप आवेदक को रजिस्टर कर सकेगा, जिसके लिए आवेदक को उचित पाया जाता है और उसे प्ररूप बी वि वि प्रा/द3 में प्रमाणपत्र दे सकेगा।

17. कोई आवेदक, जिसे विनियमों के अधीन रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र अनुदत्त किया गया है, बीमा कारबार आरंभ करेगा, जिसके लिए उसे रजिस्ट्रीकरण की तारीख के 12 मास के भीतर प्राधिकृत किया गया है।

परन्तु, फिर भी कंपनी यदि यह अनुभव करती है वह 12 मास की विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर बीमा कारबार आरंभ करने में समर्थ नहीं होगी तो वह समय सीमा की समाप्ति के पूर्व, प्राधिकरण को उचित लिखित आवेदन द्वारा अवधि बढ़ाने के लिए मांग कर सकेगा।

18. विनियम 17 में निर्दिष्ट अनुरोध की प्राप्ति पर प्राधिकरण उसकी जांच करेगा और अपना विनिश्चय लिखित में, या तो अनुरोध को नामंजूर करते हुए या उसे स्वीकार करते हुए, संसूचित करेगा।

19. विनियम 16 के अधीन रजिस्ट्रीकरण के अनुदान की तारीख से 24 मास के परे प्राधिकरण द्वारा समय की कोई वृद्धि नहीं की जाएगी।

अध्याय 4

20. प्रमाणपत्र के नवीकरण की रीति-(1) कोई बीमाकर्ता, जिसे अधिनियम की धारा 3 के अधीन प्रमाणपत्र अनुदत्त किया गया है, प्रत्येक वर्ष दिसम्बर के 31वें दिन के पूर्व प्राधिकरण को प्रमाणपत्र के नवीकरण के लिए प्ररूप बी वि वि प्रा/द5 में आवेदन करेगा और ऐसे आवेदन के साथ उतनी फीस के संदाय का साक्ष्य होगा जो,-

(क) बीमा कारबार के प्रत्येक वर्ग के लिए पचास हजार रुपए से उच्चतर होगी; और

(ख) उस वित्तीय वर्ष के दौरान, जिसके पूर्ववर्ती वर्ष में प्रमाणपत्र के नवीकरण के लिए आवेदन करना अपेक्षित है, भारत में बीमाकर्ता द्वारा सीधे लिखी गई कुल सकल प्रीमियम के एक प्रतिशत का पांचवां भाग से उच्चतर या पांच करोड़ रुपए से उच्चतर, इनमें से जो भी कम हो; (और केवल पुनर्बीमा कारबार करने वाले बीमाकर्ता की दशा में, भारत में सीधे लिखी गई कुल सकल प्रीमियम की बजाए भारत में उसके द्वारा स्वीकार किए गए जोखिम पुनर्बीमा के संबंध में कुल प्रीमियम को हिसाब में लिया जाएगा।)

(2) यदि बीमाकर्ता उपविनियम (1) में विनिर्दिष्ट तारीख के पूर्व रजिस्ट्रीकरण के नवीकरण के लिए आवेदन करने में असफल रहता है तो प्राधिकरण, आवेदन के साथ संदेय फीस के दस प्रतिशत की शास्ति के रूप में अतिरिक्त फीस के साथ और आवेदन के साथ संदेय फीस की प्राप्ति पर रजिस्ट्रीकरण के नवीकरण के लिए आवेदन को स्वीकार कर सकेगा।

21. प्रमाणपत्र के नवीकरण के लिए फीस के संदाय की रीति—प्रमाणपत्र के नवीकरण के लिए फीस भारतीय रिजर्व बैंक के पास बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण के खाते में संदत्त की जाएगी।

22. द्विप्रतिक प्रमाणपत्र का जारी किया जाना—प्राधिकरण, पांच हजार रुपए की फीस की प्राप्ति पर, बीमाकर्ता को द्विप्रतिक प्रमाणपत्र जारी कर सकेगा, यदि बीमाकर्ता प्राधिकरण को प्ररूप बी वि प्रा/द4 में आवेदन करता है।

अध्याय 5

व्यतिक्रम की दशा में कार्रवाई के लिए प्रक्रिया

23. प्रमाणपत्र का निलम्बन—किसी ऐसी शास्ति पर, या अधिनियम के उपबंधों के अधीन की गई किसी कार्रवाई पर, प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, जो अधिरोपित की जाए या की जाए, कोई ऐसी भारतीय बीमा कंपनी या बीमाकर्ता का, जो—

(क) अपना कारबार पालिसीधारियों के हितों के प्रतिकूलतः करता है;

(ख) बीमा कारबार से संबंधित प्राधिकरण द्वारा यथा अपेक्षित कोई जानकारी देने में असफल रहता है;

(ग) अधिनियम के अधीन या प्राधिकरण द्वारा यथा अपेक्षित काल्पिक विवरणियां नहीं देता है;

(घ) प्राधिकरण द्वारा संचालित किसी जांच में सहयोग नहीं देता है;

(ङ) बीमा कारबार के छलसाधन में लिप्त होता है;

(च) अनुचित व्यापार व्यवहार में लिप्त होता है;

(छ) अधिनियम की धारा 27घ की उपधारा (1क) के अधीन विनिर्दिष्ट अवसंरचना का सामाजिक सेक्टर में विनिधान करने में असफल रहता है;

राजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र ऐसी अवधि के लिए बीमा कारबार के वर्ग या वर्गों के लिए निलंबित किया जा सकेगा, जो आदेश द्वारा, प्राधिकरण द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए।

परन्तु प्राधिकरण, कारणों को लिखित में अभिलिखित करते हुए, ऊपर वर्णित प्रकार के व्यतिक्रमों की पुनरावृत्ति की दशा में, प्रमाणपत्र के दहकरण की शास्ति अधिरोपित कर सकेगा।

24. प्रमाणपत्र के निलम्बन या दहकरण का आदेश करने की रीति—निलम्बन या दहकरण का कोई भी आदेश, इन विनियमों में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया के अनुसार जांच आयोजित करने के पश्चात् के सिवाय, अधिरोपित नहीं किया जाएगा।

25. निलंबन या रहकरण के पूर्व जांच आयोजित करने की रीति—(1) प्राधिकरण, विनियम 24 के अधीन कोई जांच आयोजित करने के प्रयोजन के लिए एक जांच अधिकारी नियुक्त कर सकेगा।

(2) जांच अधिकारी, बीमाकर्ता को उसके रजिस्ट्रीकृत कार्यालय या कारबार के प्रधान स्थान पर सूचना जारी करेगा।

(3) बीमाकर्ता ऐसी सूचना की प्राप्ति की तारीख से तीस दिन के भीतर दस्तावेजी या अन्य साक्ष्य, जिस पर वह भरोसा करता है, या बीमाकर्ता से प्राधिकरण द्वारा मांगे गए साक्ष्य की प्रतियों सहित, जांच अधिकारी को उत्तर प्रस्तुत करेगा।

(4) जांच अधिकारी उपविनियम (3) के अधीन बीमाकर्ता द्वारा दिए गए अपने उत्तर के समर्थन में आवेदन करने में समर्थ बनाने के लिए, बीमाकर्ता को सुनवाई का उचित अवसर देगा।

(5) बीमाकर्ता, जांच अधिकारी के समक्ष या तो स्वयं या बीमाकर्ता द्वारा सम्यक्ता: प्राधिकृत किसी व्यक्ति के माध्यम से उपसंजात हो सकेगा।

परन्तु जांच में बीमाकर्ता का प्रतिनिधित्व करने के लिए किसी अधिवक्ता को अनुज्ञात नहीं किया जाएगा:

परन्तु यह और कि जहां प्राधिकरण द्वारा कोई अधिवक्ता उपविनियम (6) के अधीन उपस्थापन अधिकारी के रूप नियुक्त किया गया है वहां बीमाकर्ता के लिए यह निधि पूर्ण होगा कि वह अपना मामला किसी अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थापित करे।

(6) यह आवश्यक समझा गया है कि जांच अधिकारी, प्राधिकरण को अपना मामला पेश करने के लिए उपस्थापन अधिकारी नियुक्त करने के लिए कहे।

(7) जांच अधिकारी सभी सुसंगत तथ्यों और बीमाकर्ता द्वारा किए आवेदनों को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकरण को रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा और दी जाने वाली शास्ति की सिफारिश और प्रस्तावित शास्ति का औचित्य भी बताएगा।

26. कारण बताओ सूचना और आदेश—(1) जांच अधिकारी से रिपोर्ट प्राप्त होने पर प्राधिकरण उस पर विचार करेगा और यदि वह आवश्यक समझता है, तो कारण बताओ सूचना जारी करेगा कि क्यों न शास्ति, जो वह ठीक समझे, अधिरोपित की जाए।

(2) बीमाकर्ता, कारण बताओ सूचना की प्राप्ति की तारीख से 21 दिन के भीतर प्राधिकरण को उत्तर भेजेगा।

(3) प्राधिकरण कारण बताओ सूचना के उत्तर पर विचार करने के पश्चात् चथासंभव शीघ्र किन्तु उत्तर की, यदि कोई हो, प्राप्ति से तीस दिन से अनधिक, ऐसे आदेश पारित करेगा जो वह ठीक समझे। यदि सूचना की तारीख के 10 दिन के भीतर बीमाकर्ता द्वारा प्राधिकरण को कोई उत्तर नहीं दिया जाता है तो प्राधिकरण एक पक्षीय मामले का विनिश्चय करने के लिए अग्रसर होगा।

(4) उपविनियम (3) के अधीन पारित आदेश उसके लिए कारण देगा, जिसके अन्तर्गत उस आदेश द्वारा अधिरोपित शास्ति का औचित्य भी है।

(5) प्राधिकरण, बीमाकर्ता को उपविनियम (3) के अधीन किए आदेश की प्रति भेजेगा।

27. प्रमाणपत्र के निलंबन या रहकरण का प्रभाव—प्रमाणपत्र के निलंबन या रहकरण की तारीख से ही बीमाकर्ता नया बीमा कारबार करना बंद कर देगा।

28. आदेश का प्रकाशन—विनियम 26 के उपविनियम (3) के अधीन पारित प्राधिकरण का आदेश, उस क्षेत्र के, जहां बीमाकर्ता के कारबार का प्रधान स्थान है, कम से कम दो दैनिक समाचारपत्रों में प्रकाशित किया जाएगा।

अध्याय 7

विद्यमान बीमाकर्ताओं को लागू उपबंध

29. विद्यमान बीमाकर्ताओं का रजिस्ट्रेशन—(1) बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) के प्रारंभ के पूर्व भारत में बीमा कारबार चलाने वाला प्रत्येक बीमाकर्ता और अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रेशन को अपेक्षित करने वाला

बीमाकर्ता बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) के प्रारंभ से तीन मास के भीतर रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र अनुदान करने के लिए प्ररूप बी वि वि प्रा-द2 में आवेदन करेगा।

(2) प्रत्येक आवेदन के साथ-

(क) रजिस्ट्रीकरण का मूल प्रमाणपत्र होगा;

(ख) एक पुष्टिकरण होगा कि अधिनियम की धारा 7 की अपेक्षाओं को पूरा कर दिया है;

(ग) यदि आवेदन जीवन बीमा कारबार या साधारण बीमा कारबार के रजिस्ट्रीकरण के प्रमाणपत्र के अनुदान के लिए है, तो समादत्त शेयर पूंजी एक करोड़ रुपए या उस से अधिक है, का साक्ष्य होगा।

(घ) यदि आवेदन पुनर्बीमा कारबार के रजिस्ट्रीकरण के प्रमाणपत्र के अनुदान के लिए है तो समादत्त शेयर पूंजी दो सौ करोड़ रुपए से अधिक होने का साक्ष्य होगा;

(ङ) आवेदक के प्रधान अधिकारी द्वारा यह प्रमाणित करते हुए एक शपथ पत्र होगा कि अधिनियम की धारा 6 की सभी अपेक्षाओं का अनुपालन कर दिया है;

(च) बीमाकर्ता के मानक प्ररूपों की, और बीमाकृत दरों, फायदों और बीमा पालिसियों के बारे में प्रस्थापित किए जाने वाले निबंधनों और शर्तों के विवरणों की, साथ ही जीवन बीमा कारबार की दशा में बीमांकक द्वारा इस आशय का प्रमाणपत्र कि ऐसी दरें, फायदे, निबंधन और शर्तें व्यावहारिक और सही हैं, एक प्रमाणित प्रति होगी।

(छ) कारबार के प्रत्येक वर्ग के लिए पचास हजार रुपए की फीस के संदाय को दर्शित करने वाली मूल रसीद होगी;

(ज) कोई अन्य जानकारी जो प्राधिकरण को रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन पर कार्रवाई के दौरान अपेक्षित होगी;

(3) प्राधिकरण प्रत्येक ऐसे आवेदक को रजिस्टर करेगा, जो उपविनियम (2) के अनुसार आवेदन प्रस्तुत करता है और प्ररूप बी वि वि प्रा/द3 में प्रमाणपत्र अनुदान करेगा।

30. संक्रमणकालीन उपबंध-प्रत्येक विद्यमान बीमाकर्ता से अपेक्षा है कि वह प्राधिकरण द्वारा बनाए गए सभी विनियमों का, उनकी अधिसूचना की तारीख से पालन करेंगे:

परन्तु प्राधिकरण द्वारा बनाए गए निम्नलिखित विषयों पर बनाए गए विनियमों का, अर्थात्:-

(i) लेखा;

(ii) आस्तिगण, दायित्व और ऋणशोधन क्षमता;

(iii) पुनर्बीमा;

विद्यमान बीमाकर्ता की पसंद पर उन विनियमों के प्रारंभ से बारह मास की अवधि के भीतर अनुपालन किया जा सकेगा :

परन्तु, फिर भी प्राधिकरण, उसे विद्यमान बीमाकर्ता द्वारा आवेदन करने पर, उपर्युक्त विनियमों के अनुपालन की समयावधि विधिमान्य कारणों के लिए उतनी और बढ़ाई जा सकेगी, किन्तु जो ऊपर उल्लिखित क्षेत्रों में विद्यमान बीमाकर्ता द्वारा विनियमों का अनुपालन करने के लिए कुल समय उन विनियमों के प्रारंभ से चौबीस मास से आगे न बढ़े।

परन्तु यह और कि जहां विद्यमान बीमाकर्ता उस विनियम के अधीन उसे अनुज्ञात समय के भीतर ऊपर उल्लिखित क्षेत्रों में विनियमों से सहमत नहीं होता है वहां प्राधिकरण, उसके विरुद्ध अपने निदेशों के पालन करने में असफल रहने के लिए कार्रवाई करेगा।

उपर्युक्त के होते हुए भी, प्राधिकरण को कोई बात, इस विनियम के पहले परन्तुक में उल्लिखित विषयों के संबंध विद्यमान बीमाकर्ता से जानकारी मांगने और जहां आवश्यक हो, बीमाकर्ता को निदेश देने से निवारित नहीं करेगी।

प्ररूप बी वि वि प्रा/द।

[बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (भारतीय बीमा कंपनी रजिस्ट्रीकरण) विनियम, 2000 देखें]

(यह प्ररूप बीमा विनियामक प्राधिकरण द्वारा आवेदकों को निःशुल्क दिया जाता है। कृपया आवेदन को सावधानी पूर्वक भरें। यदि आप को कोई स्पष्टीकरण चाहिए तो विनिर्दिष्ट: अपने प्रश्न का उल्लेख करें या पूर्व निर्धारित समय के अधीन रहते हुए, व्यक्तिगत रूप से हमें मिलें)

1. आवेदक का नाम:
2. पता:
3. कंपनी के रूप में निगमन की तारीख: दि दि म म व व व व
4. रजिस्ट्रीकरण संख्यांक (कंपनी रजिस्ट्रार द्वारा जारी)
5. उस बीमा कारबार के वर्ग का कथन करें, जिसके लिए रजिस्ट्रार की मांग की है:
6. प्राधिकृत पूंजी की रकम और शेयरों का अंकित मूल्य और उनके संख्यांक:
7. समादत्त पूंजी की रकम और साधारण शेयरों की संख्या:
8. शेयरों का वर्गीकरण:
9. शेयरधारकों के प्रत्येक वर्ग का मत देने का अधिकार:

10. शेयरधारकों का ब्यौरा : कृपया पूरा नाम, पता, बीमाकर्ता की समादत्त पूंजी में शेयर धारण की प्रतिशतता, वयवसाय, अर्हताएं और अनुभव, धारित शेयरों की संख्या तथा कंपनी में शेयर पूंजी की प्रतिशतता दें, यदि आवश्यक हो तो पृथक् पन्ने संलग्न करें। आवेदक और संप्रवर्तकों की पुरोधृत पूंजी के 1% से अधिक धारण करने वाले व्यक्तियों के ब्यौरे पृथक् विवरणों में दिए जाने हैं।

पूरा नाम (प्रथम, मध्य, उपनाम)	जन्म की तारीख	टैलीफोन सं०, फैक्स सं०, ई-मेल सहित पता	अर्हताएं	अनुभव	वर्तमान आजीविका	साधारण (मत देने के अधिकार) शेयरों की सं० और कुल धारण की प्रतिशतता	टिप्पणियां
1	2	3	4	5	6	7	8
श्री/श्रीमती							

टिप्पण: यदि संप्रवर्तक भारत में या विदेश में रजिस्ट्रीकृत कोई कंपनी या निगमित निकाय है तो स्तम्भ (1) में कंपनी या निगमित निकाय का नाम, स्तम्भ (2) में निगमन का देश और रजिस्ट्रीकरण की तारीख, स्तम्भ (5) में कंपनी के कार्य क्षेत्र का उल्लेख करें, स्तम्भ (4) और (6) खाली छोड़ दें; कार्य करने के देश, कारबार की प्रकृति उपदर्शित करते हुए, पिछले 5 वर्षों के लिए कंपनी या निगमित निकाय के लेखा विवरण संलग्न करने हुए, विशिष्टियां दी जानी हैं। यदि एक से अधिक संप्रवर्तक हैं तो जानकारी ऐसी रीति में प्रस्तुत की जाए कि पक्षकारों के अंतः संबंध, यदि कोई हो, स्पष्ट रूप से उपदर्शित हों। यदि कोई संप्रवर्तक किसी अन्य का नामनिर्देशित है तो उपर्युक्त क्षेत्रों में मुख्य व्यक्ति के ब्यौरे दिए जाने हैं। पूर्ण और पूरी जानकारी सच्चाई से देने में पर्याप्त सावधानी बरती जाए। बाद में कोई दुर्व्यपदेशन पाए जाने से आवेदक, उसके संप्रवर्तकों और उससे जुड़े अन्य व्यक्तियों को निरर्हित किया जाएगा।

यदि अपेक्षित कुल पूंजी अभी तक पुरोधृत नहीं है तो शेयरों में आशयित अभिदायों के बारे में जानकारी दें और यदि भावी शेयरधारकों ने पूंजी में अभिदाय के लिए कोई अभिबंधन या आश्वासन दिया है।

11. आवेदक : इस खंड में पृष्ठभूमि संबंधी जानकारी दी जानी चाहिए:

- संयुक्त उद्यम में भागीदारों की विशिष्टियां (उदाहरणार्थ, कंपनी का नाम, पता, निदेशकों के नाम, आदि)
- संप्रवर्तक कंपनियों का गठन - समादत्त पूंजी का 1% से अधिक धारण का करने वाले शेयरधारकों का ब्यौरा।
- संप्रवर्तक कंपनियों के कारबार की प्रकृति और कारबार के वर्ष।
- संप्रवर्तक कंपनियों के संबंध में त्रिनियामक मध्यक्षेप / निर्बंधात्मक निदेशों का पिछला अभिलेख।
- आवेदक के बीमा बाजार में प्रवेश के कारण।
- पिछले पांच वर्षों का वित्तीय विवरण। भागीदारों की संख्या।
- आवेदक द्वारा प्रदर्शित भारतीय बाजार के प्रति अभिवंचन की मात्रा का उपदर्शन।
- कंपनी के संवर्धन के लिए शेयरधारकों के बीच करार।
- विदेशी संप्रवर्तकों द्वारा लिए गए दायित्व।
- विदेशी संप्रवर्तकों आवेदक कंपनी के दायित्व।
- आरंभिक और भावी पूंजी आवश्यकताओं के प्रति पूरा करने के लिए स्रोत।
- अनिगमित संप्रवर्तकों की दशाओं में उपयुक्ततः उपांतरित उपर्युक्त आधारों के संबंध में जानकारी दी जाए।

संप्रवर्तक (भारतीय संप्रवर्तकों और विदेशी संप्रवर्तकों के बारे में, यदि कोई हो, पृथक् विवरण दिए जाने हैं)

संप्रवर्तकों के ब्यौरे : (कृपया पूरा नाम, पता, समादत्त पूंजी में धारण की प्रतिशतता, आजीविका, अर्हताएं और अनुभव, संख्यांक और कंपनी में शेयर पूंजी की प्रतिशतता)

पूरा नाम (प्रथम, मध्य, उपनाम)	जन्म की तारीख	टेलीफोन सं., फैक्स सं., ई-मेल सहित पता	अर्हताएं	अनुभव	वर्तमान आजीविका	साधारण (मत देने के अधिकार) शेयरों की सं. और कुल धारण की प्रतिशतता	टिप्पणियां
1	2	3	4	5	6	7	8
श्री/श्रीमती							

यदि संप्रवर्तक भारत में या विदेश में रजिस्ट्रीकृत कोई कंपनी या निगमित निकाय है तो स्तम्भ (1) में कंपनी या निगमित निकाय का नाम, स्तम्भ (2) में रजिस्ट्रीकरण की तारीख दें स्तम्भ (3) में कंपनी के कार्य क्षेत्र का उल्लेख करें। स्तम्भ (4) और (6) खाली छोड़ दें। उपर्युक्त प्रोफार्मा में ऐसे संप्रवर्तक द्वारा नाम निर्दिष्ट व्यक्तियों की विशिष्टताएं और कार्य करने के देशों को उपदर्शित करते हुए, पिछले 5 वर्षों के लिए कंपनी या निगमित निकाय के लेखा-विवरणों को दर्शित करते हुए, कारबार की प्रकृति के ब्यौरे भी दिए जाने चाहिए।

12. आवेदक कंपनी :

इस खंड में कंपनी के मुख्य पहलु दिए जाने चाहिए। इस के अन्तर्गत निम्नलिखित आणा:-

- आवेदक कंपनी का नाम:
- रजिस्ट्रीकरण की तारीख दि दि / म म /व व व व:
(कंपनी अधिनियम, 1956 के अनुसार)
- रजिस्ट्रीकरण संख्यांक:
- रजिस्ट्रीकृत कार्यालय का पता:
- मुख्यालय का पता:
- संसूचना के लिए पता (कंपनी सचिव का नाम, टेलीफोन संख्यांक, फैक्स संख्यांक, मोबाईल संख्यांक, ई-मेल पता और ऐसे अन्य ब्यौरे दें):
- संप्रवर्तक के मुख्य पहलु (उदाहरणार्थ, आपसी शेयरधारिताएं, भूमिकाएं और उत्तरदायित्व, निदेश-पद, अंतः संबंध, आदि):
- कार्यक्षेत्र के राज्य/शाखा की अवस्थिति (प्रस्तावित):
- कंपनी के उद्देश्यों का विवरण:
- ज्येष्ठ प्रबंध-तंत्र (मुख्य व्यक्ति) और उत्तरदायित्वों का आवंटन (प्रस्तावित):
- संगठनात्मक ढांचा/रिपोर्टिंग संबंध:
- प्रधान कार्यालय और प्रचालक एकाओं के बीच उत्तरदायित्वों का आवंटन:
[रजिस्ट्रीकृत कंपनी के संगम ज्ञापन और संगम अनुच्छेद की चार प्रमाणित प्रतियां संलग्न करें।]

13. पूंजी ढांचा :

- प्राधिकृत पूंजी की रकम और शेयरों की संख्या:
- शेयरों का वर्गीकरण:
- पुरोधृत पूंजी की रकम और शेयरों की संख्या:
- शेयरों के प्रत्येक वर्ग से जुड़े मत देने के अधिकार:
- प्रत्येक साधारण शेयर/अन्य शेयरों का अभिहित/अंकित मूल्य:

14. निदेशक और मुख्य व्यक्ति:

नीचे दिए गए प्रोफार्मा में प्रत्येक निदेशक और मुख्य निदेशकों और मुख्य व्यक्तियों के बारे में विशिष्टियां प्रस्तुत करें:-

- नाम (और कोई पूर्ववर्ती नाम):
- प्राइवेट और कारबार पता (जिसके अन्तर्गत पिछले 15 वर्षों के भीतर कोई अन्य प्राइवेट पते हैं), वर्तमान टेलीफोन, फैक्स और ई-मेल पते:
- जन्म की तारीख और स्थान:
- राष्ट्रीयता (और कोई पूर्ववर्ती राष्ट्रीयता):
- पारपत्र/पहचान पत्र:
 - संख्यांक
 - जारी करने की तारीख और स्थान:
 - समाप्ति की तारीख:
 - जारी करने वाला प्राधिकारी:
- बैंक का नाम और पता:
 - लेखा संख्यांक और लेखा का प्रकार:
 - कंपनी को या उसकी ओर से, जिसमें निदेशक और मुख्य व्यक्तियों का प्रबंध-तंत्र या शेयरधारिता हित है, दिए गए किन्हीं ऋणों या प्रत्याभूतियों के ब्यौरे:
- कुटुम्ब की प्रास्थिति:
- शैक्षणिक अर्हता के ब्यौरे और तारीख:
- व्यावसायिक अर्हता के ब्यौरे और तारीख:
- भावी पद का वर्णन (जिसके अन्तर्गत उत्तरदायित्व हैं) और आरंभ की प्रस्तावित तारीख:
- कार्य अनुभव:
 - वर्तमान और पूर्ववर्ती नियोजक (पिछले 15 वर्ष के):

-इसके ब्यौरे दें कि निदेशकों और मुख्य व्यक्तियों और/या उनके नियोजकों का औपचारिक रूप में पर्यवेक्षण या विनियमन किया गया है:

-नियोजक के कारबार की प्रकृति:

-अभिधान : (जिसके अन्तर्गत कर्तव्य और उत्तरदायित्व है):

-नियुक्ति की तारीख:

-त्यागपत्र/प्रस्थान की तारीख:

-पिछले 15 वर्षों में अन्य कारबार हितों के ब्यौरे, जहां निदेशक और मुख्य व्यक्ति शेयरधारक, निदेशक या नियंत्रक के रूप में कार्य करते रहे हैं:

● कंपनी या संबंधित कंपनियों या अन्य तीसरे पक्षकारों के साथ संबंध:-

- कंपनी या संबंधित कंपनियों या तीसरे पक्षकारों के शेयरधारिता या मत देने की शक्तियों के ब्यौरे:

- निदेशकों और मुख्य व्यक्तियों के पूर्व नियोजकों और कंपनी या संबंधित कंपनियों या तीसरे पक्षकारों के बीच किन्हीं कारबारी संबंधों के ब्यौरे:

● निदेशकों और मुख्य व्यक्तियों की ख्याति और चरित्र संबंधी पूर्ण ब्यौरे:

- आवेदक को कभी दिवालिया घोषित किया गया है:

- कपट या अन्य बेईमानी से जुड़े किसी अपराध की कोई दोषसिद्धियां:

- किसी कंपनी या संगठन के निदेशक के रूप में या उस के प्रबंध-तंत्र में कार्य करने की निदेशकों और मुख्य व्यक्तियों की कोई निरर्हता:

- क्या निदेशकों और मुख्य व्यक्तियों को कभी कोई विनियमित वित्तीय कारबार चलाने के लिए अनुज्ञप्ति या प्राधिकरण देने से इन्कार (या विखंडन हुआ था) किया गया है:

● किसी सरकार, विनियामक या व्यावसायिक निकाय द्वारा कोई धिग्दण्ड या आरंभ की गई कोई अनुशासनिक कार्रवाई:

● पद या नियोजन से कोई पदच्युति, निदेशक के या मुख्य व्यक्ति के नियोजक द्वारा अनुशासनिक कार्यवाही के अधीन रहा है या किसी व्यवसाय या आजीविका में प्रवेश से इन्कार किया गया है:

● कोई ऐसी मुकदमेंबाजी जिसमें निदेशक और मुख्य व्यक्ति पिछले पांच वर्षों से सम्मिलित रहे हैं:

● क्या कोई ऐसी कंपनी या संगठन, जिसके साथ निदेशक, अधिकारी, प्रबंधक, शेयरधारक या नियंत्रक के रूप निदेशक या मुख्य व्यक्ति सहयुक्त थे, उसका समापन हो गया है, रिसीवर नियुक्त हो गया है या तो जब निदेशक या मुख्य व्यक्ति उसके साथ सहयुक्त थे, या निदेशकों या मुख्य व्यक्तियों के सहयोजन की समाप्ति के एक वर्ष के भीतर व्यापार करना बंद कर दिया था:

टिप्पणियों के स्तम्भ में उल्लेख करें कि क्या कोई निदेशक भारत में या विदेश में किसी अन्य बीमा कंपनी (या पुन-बीमाकर्ता) में अधिकर्ता, दलाल, मध्यस्थ, निदेशक या कर्मचारी है या भारत में या विदेश में किसी अन्य कंपनी का निदेशक है।

इन प्रयोजनों के लिए "मुख्य व्यक्ति" के अन्तर्गत मुख्य कार्यकारी, मुख्य पणन अधिकारी, नियत बीमांकक, मुख्य विनिधान अधिकारी, मुख्य आंतरिक लेखापरीक्षक और मुख्य वित्त अधिकारी है।

15. बाहरी लेखा परीक्षक (प्रस्तावित) :

पूरा नाम (प्रथम, मध्य, उपनाम)	जन्म की तारीख	टेलीफोन सं०, फैक्स सं०, ई-मेल सहित पता	नियुक्ति की तारीख	बीमा कंपनियों की लेखापरीक्षा का अनुभव	नियुक्ति की अवधि	साधारण (मताधिकार) शेयरों की सं० और आवेदक कंपनी में कुल धारिता की प्रतिशतता	टिप्पणियां
1	2	3	4	5	6	7	8
श्री/श्रीमती							

यदि लेखापरीक्षक कोई फर्म है तो स्तम्भ (1) में फर्म का नाम, स्तम्भ (2) में उसके रजिस्ट्रीकरण की तारीख लिखें।

टिप्पण: बाहरी कानूनी लेखापरीक्षकों चुनने में, आवेदक बीमा कंपनियों के वित्तीय विवरण और लेखापरीक्षा रिपोर्ट तैयार करने के लिए विनियमों द्वारा मार्ग दर्शित होगा और विशेष रूप से उन विनियमों से, जो लेखापरीक्षकों की नियुक्ति से संबंधित हैं।

16. किया जाने वाला कारबार:

किए जाने वाले बीमा कारबार का वर्णन करें

17. देश में कहां आप बीमा कारबार करना चाहते हैं? (बाक्स में सही का चिह्न लगाएं)

(क) क्षेत्र: ☐ उत्तर ☐ दक्षिण ☐ पूर्व ☐ पश्चिम ☐ मध्य

(ख) महानगर शहर : ☐ मुंबई ☐ चेन्नई ☐ दिल्ली ☐ कलकत्ता

(ग) संकेंद्रण: ☐ ग्रामीण ☐ शहरी ☐ दोनों ☐ ग्रामीण और शहरी

18. वितरण प्रणाली: ☐ सीधे ☐ बंधे हुए ☐ दलाल/ ☐ अन्य अभिकर्ता मध्यस्थ

19. वित्तीय संभावनाएं (जीवन और साधारण बीमा, दोनों के लिए-रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदित वर्ग पर आधारित):

वित्तीय संभावनाओं के लिए उपयोग किए गए माडल (नमूना) का वर्णन किया जाना चाहिए, जो धारणाओं पर आधारित होगा और जो आरंभ से प्रत्येक वर्ष के लिए 5 वर्षों की अवधि तक होगा। इनमें निम्नलिखित दिए जाने चाहिए:-

- विक्रय बल का आकार।
- विक्रय की रकम।
- विक्रय समर्थन और प्रशासनिक कर्मचारिवृत्त का आकार।
- प्रीमियम आय।
- विनिधान आय।
- कमिशन और अन्य विक्रय संबंधी व्यय।

- प्रशासन व्यय।
- आय-कर और अन्य कर।
- कानूनी आक्षतियाँ।
- अपेक्षित ऋण शोधनक्षमता मार्जिन।
- लाभ और हानि लेखा तथा तुलनपत्र।
- पहला वर्ष और नवीकरण व्यय अनुपात।
- पूंजी आवश्यकताएँ-भारतीय और विदेशी।
- ब्रेक-ईवन अवधियाँ और पूंजी संबंधी विवरणी।
- शेयरधारकों को लाभांशः भारतीय और विदेशी।
- पालिसीधारक अतिशेष और बोनस की घोषणाएँ।

इस खंड में उस रीति पर भी विचार-विमर्श होना चाहिए, जिसमें भावी पूंजी आवश्यकताओं को पूरा किया जाए।

20. संवेदनशीलता का विश्लेषण (जीवन) :

ऊपर पैरा 19 में दिया गया विश्लेषण आधार-परिप्रेक्ष्य पर आधारित होगा और कुछ वैकल्पिक परिप्रेक्ष्यों पर आधारित होगा। “आशावादी” और “निराशावादी” धारणाओं पर आधारित संवेदनशीलता विश्लेषण भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। ये ऐसी धारणाओं से संबंधित होंगे जैसे कि—

- विक्रय बल का आकार।
- विक्रय की मात्रा।
- विक्रय का औसत आकार।
- मृत्यु/उदासीनता पालिसी की समाप्ति के स्तर।
- प्रशासनिक व्यय (जिनके अन्तर्गत मूल्य वृद्धि भी है)।
- भावी विनिधान स्थितियाँ।

उस रीति पर विचार विमर्श, सम्मिलित किया जाना चाहिए, जिसमें निराशावादी परिप्रेक्ष्य के परिणाम को संभाला जाएगा।

21. ग्रामीण कारबार :

विधान की अपेक्षा है कि नए कारबार का विनिर्दिष्ट प्रतिशत ग्रामीण और सामाजिक सेक्टर में किया जाना चाहिए। वह रीति, जिसमें यह अपेक्षा पूरी होगी, वर्णित की जानी चाहिए। इस खंड के प्रयोजन के लिए, इस क्षेत्र को सम्मिलित करने वाले सुसंगत विनियमों का अवलोकन करें।

22. असंगठित सेक्टर और पिछड़े वर्गों में दायित्व :

इसके अतिरिक्त बीमाकर्ता समाज के आर्थिक रूप से भेद्य वर्गों और पिछड़े वर्गों के जोखिम को इसके अन्तर्गत लाने के लिए असंगठित कटर में दायित्वों का निर्वहन करेंगे। इस खंड के प्रयोजन के लिए इस क्षेत्र को सम्मिलित करने वाले सुसंगत विनियमों का अवलोकन करें।

वह रीति, जिस में इन अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रस्ताव है, ब्यौरेवार वर्णित की जानी चाहिए।

23. पूर्ववर्ती आवेदन की विशिष्टियां: क्या आवेदक ने कभी भारत में या भारत के बाहर अनुज्ञप्ति के लिए आवेदन किया है? यदि ऐसा है तो विशिष्टियां दें।

24. निष्कर्ष: अन्त में, रिपोर्ट में इन क्रियाकलापों की आर्थिक रूप से व्यवहार्यता पर भी विचार-विमर्श होना चाहिए। कोई विशेष मामले या चिन्ताएं भी उपदर्शित की जानी चाहिए।

प्रमाणन

मैं, अधोदस्तरी, सत्यनिष्ठा से घोषणा करता हूं कि इस आवेदन प्ररूप में आवेदक कंपनी की ओर से दिए गए तथ्य सत्य हैं और संभावित लक्ष्य और अनुमान समुचित धारणाओं पर आधारित हैं।

स्थान:

प्राधिकृत व्यक्ति के हस्ताक्षर (मुद्रा सहित)

तारीख:

प्ररूप बी वि वि प्रा/द-2

रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन

[बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (भारतीय बीमा कंपनी रजिस्ट्रीकरण) विनियम, 2000 का विनियम 10 देखें]

(यह प्ररूप बीमा विनियामक प्राधिकरण द्वारा आवेदकों को निःशुक्त दिया जाता है। कृपया आवेदन को सावधानी पूर्वक भरें। यदि आप को कोई स्पष्टीकरण चाहिए, तो विनिर्दिष्ट: अपने प्रश्न का उल्लेख करें या पूर्व निर्धारित समय के अधीन रहते हुए, व्यक्तिगत रूप से हमें मिलें)

1. भौगोलिक विस्तार: भारत में प्रत्येक राज्य और संघ राज्यक्षेत्र, विदेशों में प्रशासनिक कार्यालयों और ग्रामीण क्षेत्रों में भी कार्यालय के भारसाधक व्यक्ति के नाम सहित पते दें।

[यदि आवेदक ने विनिश्चय नहीं किया है तो वह भारत में प्रत्येक राज्य और संघ राज्यक्षेत्र, विदेशों और ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रस्तावित प्रशासनिक कार्यालयों का प्रस्तावित संख्यांक और अवस्थान दें]

2. बाजार अनुसंधान और विश्लेषण: कंपनी ने बाजार संभावनाओं, उपभोक्ता आवश्यकताओं, लक्ष्य बाजार, उत्पाद स्रोत आदि (विशेषतः स्वास्थ्य बीमा क्षेत्र) को अभिनिश्चित करने के लिए किसी रूप में बाजार विश्लेषण किया होगा। निष्कर्ष सहित अनुसंधान का पूरा विवरण दें।

3. विक्रय किए जाने वाले उत्पाद: किए गए बाजार अनुसंधान और विश्लेषण के आधार पर भागीदारों ने विक्रय किए जाने वाले उत्पादों पर विनिश्चय किया होगा—व्यष्टिक या सामूहिक बीमा/वर्णन में निम्नलिखित सम्मिलित होने चाहिए:-

- उत्पाद के गुणों का वर्णन।
- वह लक्ष्य बाजार जहां उत्पाद का विक्रय किया जाएगा।
- जीवन/साधारण बीमा, सहबद्ध/असहबद्ध स्वास्थ्य बीमा के उत्पादों के नामों का विनिर्देश।

4. वितरण: इस खंड में उल्लेख करें कि उत्पाद कैसे वितरित होंगे या वितरित किए जाने प्रस्तावित हैं। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित आएं:-

- प्रत्येक प्रणाली को दिए जाने वाले महत्व की मात्रा को उपदर्शित करते हुए, वितरण के लिए उपयोग की जाने वाली प्रणालियां।
- वितरण का नेटवर्क; जो बाजार में स्थापित किया जाए।
- किन्हीं प्रणालियों द्वारा विक्रय किए जाने वाले उत्पादों की कोई परिसीमाएं।
- वितरण की प्रत्येक प्रणाली को संदत्त किए जाने वाले पारिश्रमिक।

5. विक्रय संवर्धन: विज्ञापन और विक्रय संवर्धन के लिए उपयोग किया जाने वाला नजरिया; उदाहरणार्थ, उपयोग किया जाने वाला मीडिया, आवृत्ति, आदि। विक्रय सामग्री, उत्पाद को विज्ञापित करने वाला साहित्य, यदि कोई हो, की प्रतियां दी जानी चाहिए।

6. हमीदारी: इस खंड में प्रस्तावों की हमीदारी के लिए उपयोग किए गए नजरिए को वर्णित करना चाहिए; चिकित्सा और अन्य रिपोर्टें आदि के लिए की गई व्यवस्था।

कृपया हमीदारी और हमीदारों के प्रशिक्षण में विदेशी संप्रवर्तकों द्वारा दी जाने वाली सहायता की प्रकृति का भी उल्लेख करें।

7. विनिधान: प्रत्येक कंपनी ने विनिधान के अपने सिद्धान्त स्थापित किए होंगे जो उसके आशयित विक्रय किए जाने वाले उत्पादों के लिए उचित होंगे। इसका वर्णन किया जाना चाहिए। अन्य जानकारी में विनिधान कर्मचारिवृन्द, विनिधान सलाहकार (यदि बाहर से लिया गया है), विनिधान के क्रियाकलापों का अवस्थान, उपयोग किए जो वाले विनिधान दलाल, आदि। विनिधान, मूल्यांकन, प्रच्छन्नता-प्रबुद्धता-प्राधिकरण द्वारा जारी किए गए जीवन और गैर जीवन उपबंध करने वाले मानदंडों को ध्यान में रखा जाएगा।

8. सूचना प्रौद्योगिकी- बीमा उद्योग कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी पर बहुत अधिक निर्भर है। निम्नलिखित के लिए पूरा विवरण दिया जाना चाहिए:-

- वे भिन्न-भिन्न क्षेत्र, जहां कम्प्यूटर प्रणालियां उपयोग की जाएंगी।
- क्या प्रणालियां (कुछ अपेक्षित परिवर्तनों के साथ) जो स्थानीय रूप में विकसित की गई हैं या विदेशी संप्रवर्तकों द्वारा भारत में आयातित (कुछ अपेक्षित परिवर्तनों के साथ) दराज से बाहर लाई जाएंगी।
- जिस मात्रा तक प्रणालियां पालिसीधारक की सेवा के लिए उपयोग की जाएंगी।
- प्रणालियों की अन्तर-संपर्क की मात्रा।
- अपेक्षित प्रबंधात्मक सूचना प्रणालियों के विकास के लिए उपयोग की जाने वाली सूचना प्रौद्योगिकी प्रणालियों का वर्णन होगा।
- उन प्रक्रियाओं और क्रियाकलापों का विस्तार जो हाथ से चलती रहेगी।

9. ग्राहक सेवा:- ग्राहक सेवा या तो मुख्य कार्यालय के माध्यम से केन्द्रित करके या शाखा कार्यालयों/क्रियाकलाप एककों को विकेन्द्रित करके दी सकती है। वह मात्रा, जिस तक ग्राहक सेवा शाखा कार्यालयों को विकेन्द्रित की जानी अपेक्षित है, वर्णित की जानी चाहिए। ग्राहक सेवा के विभिन्न पहलुओं के लिए आरंभ की जाने के लिए आयोजित सेवा मानक वर्णित किए जाने चाहिए। "काल सेन्टर" या ग्राहक शिकायत निपटारा तंत्र आरंभ करने की कोई योजना दर्शित की जाए।

कंपनी द्वारा प्रस्तुत सेवा के विभिन्न प्रकारों के लिए नियत समय का उल्लेख करें।

10. प्रतिधारण सीमाएं और पुनर्बीमा: पुनर्बीमा व्यवस्था की प्रकृति निम्नलिखित का व्यापार देते हुए पूर्णतः वर्णित की जानी चाहिए:

- पुनर्बीमाकर्ता (ओं) का/ के नाम;
- पुनर्बीमा के आधार;
- पुनर्बीमा के निबंधन;

वह रीति, जिस में प्रतिधारण सीमाएं स्थापित की गई हैं, उस पर विचार-विमर्श किया जाना चाहिए।

11. भर्ती और प्रशिक्षण- कंपनी के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की कार्यकुशलता की आवश्यकता है। इन व्यक्तियों में अभिकर्ता, विक्रय पर्यवेक्षक, शाखा प्रबंधक, विभिन्न विभागों, आदि के लिए प्रशासनिक कर्मचारिवृन्द हैं। कुछ विभागों को विशेष तकनीका कुशल व्यक्तियों (उदाहरणार्थ, हामीदार, बीमांकक, लेखा, विक्रय, सूचना प्रौद्योगिकी आदि) की आवश्यकता होगी। इस खंड में प्रत्येक प्रवर्ग के लिए निम्नलिखित सूचना दी जानी चाहिए:-

- वांछनीय कुशल व्यक्ति।
- भर्ती के स्रोत।
- प्रशिक्षण के लिए प्रयुक्त नजरिया - आन्तरिक/बाहरी

12. आन्तरिक नियंत्रण: कंपनी को विभिन्न क्रियाकलापों के लिए प्रक्रिया और मानदंडों के सेट स्थापित करने की आवश्यकता होगी। वह रीति जिसमें ये मानिटर की जाएंगी, उसका वर्णन किया जाना चाहिए। ये क्रियाकलाप हामीदारी और नीति के मामले,

ग्राहक सेवा, विनिधान, लेखा, नए उत्पाद का मूल्य नियत करना, आरक्षितियों का आकलन और अपेक्षित ऋणशोधनक्षमता सीमान्त, विनियामक अनुपालन, दावा कार्रवाई और निपटारा प्रक्रियाओं, आदि से संबंधित हैं।

13. प्रशासन व्यय: जीवन: प्रीमियम दरों को नियत करने में, नियत बीमांकक को प्रीमियम की गणना करने में अनुमानित व्यय के स्तरों को बनाने की आवश्यकता होगी। वह रीति जिसमें प्रशासनिक व्ययों का अनुमान लगाया गया है और औसत कारणों में संपरिवर्तित किया गया है, उसे वर्णित किया जाना चाहिए। ये व्यय प्रथम वर्ष और नवीकरण, नियत और परिवर्तनीय के बीच विभेदित करना होगा। सभी अतिरिक्त व्यय भी इसके अंतर्गत आएंगे।

साधारण:

प्रस्तावित व्यय कार्यचालन कार्यालयों के स्तरों और प्रत्येक पर्यवेक्षक कार्यालय और मुख्य कार्यालय के स्तर पर प्रीमियम के प्रतिशत के अनुसार व्यय का प्रस्ताव है।

14. नए उत्पाद की कीमत नियत करना: जीवन: वित्तीय संभावनाओं में आयोजित उत्पादों के विक्रय सम्मिलित होंगे। इन उत्पादों का वर्णन यथा संभव विस्तार तक दिया जाना चाहिए। इसमें निम्नलिखित सम्मिलित होने चाहिए:

- उत्पाद के गुण, जैसे कि उसके अन्तर्गत आने वाली अधियां, प्रीमियम स्तर, अप्रतिसंहत मूल्य, ऋण व्यवस्था, आदि।

- उपयोग की जाने वाली वितरण प्रणालियां।

- कमिशन मापमान।

- औसत पालिसी आकार।

- आरक्षण करने वाली पद्धति का उपयोग।

- संगणना करने में बनाए गए विभिन्न पैमानों के स्तर। ये मृत्यु, पालिसी के समापन, व्यय, व्याज और कोई अन्य पैमाने, जो उत्पाद के लिए सुसंगत हों, से संबंधित होंगे। इन पैमानों का मूल्य दो स्तरों पर विनिर्दिष्ट होगा - आशयित स्तर पर और प्रतिकूल विचलन के लिए मार्जिनों को सम्मिलित करने का स्तर। दोनों स्तरों के लिए औचित्य दिया जाना चाहिए।

- उत्पाद के मूल्य नियतन में लाभ की कसौटी का उपयोग।

साधारण: उन उत्पादों के संबंध में, जो बाजार टैरिफ से शासित नहीं होते हैं, उनके बारे में दर्शित करें कि उनका मूल्य नियतन कैसे होगा, वह डाटा बेस, जो प्रीमियम आधारों का अवधारण करने में उपयोग किया जाएगा और निबंधन और शर्तें, सांख्यिकीय पद्धति, जो दरों की पर्याप्ततः के पुनर्विलोकन के लिए स्थापित की जाएगी।

15. सूचना नीति: जनता में बीमा के प्रति जागृति के बारे में कंपनी की नीति का उल्लेख करें।

16. प्रीमियम दरें: प्रस्थापित रिबेट सहित, यदि कोई हो, उत्पादों के लिए कंपनी की प्रीमियम सारणियों को संलग्न करें।

प्रमाणन

मैं, अधोहस्ताक्षरी, सत्यनिष्ठा से घोषणा करता हूँ कि इस आवेदन प्ररूप में आवेदक कंपनी की ओर से दिए गए तथ्य सत्य हैं और संभावित लक्ष्य और अनुमान समुचित धारणाओं पर आधारित हैं।

स्थान:

तारीख:

प्ररूप बी. वि. वि. प्रा./द3

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (प्राधिकारी की मुद्रा)

रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र

रजिस्ट्रीकरण संख्यांक —————

यह प्रमाणित किया जाता है कि —————

(बीमाकर्ता का नाम और पता) का बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) की धारा 3 की उपधारा (2क) के उपबंधों के अनुसार आज की तारीख में, नीचे दी गई अनुसूची में विनिर्दिष्ट कारबार के प्रवर्गों में संव्यवहार करने के लिए रजिस्ट्रीकरण कर लिया गया है।

दो हजार को नई दिल्ली में प्राधिकारी की मुद्रा के अधीन प्रदत्त।

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण

अनुसूची

कारबार के ऐसे प्रवर्ग जिनमें संव्यवहार किया जा सकेगा :—

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.

प्ररूप बी. वि. वि. प्रा./द 4

रजिस्ट्रीकरण के प्रमाणपत्र की दूसरी प्रति का जारी किया जाना

कोई बीमाकर्ता, इसमें विनिर्दिष्ट दस्तावेजों के साथ निम्नलिखित फारमेट में आवेदन करेगा।

सेवा में,

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकारी

नई दिल्ली।

रजिस्ट्रीकरण के प्रमाणपत्र की दूसरी प्रति के लिए आवेदन

हम आपसे रजिस्ट्रीकरण की दूसरी प्रति जारी करने के लिए प्रार्थना करते हैं, जिसके लिए हम नीचे निम्नलिखित ब्यौरे प्रस्तुत करते हैं :

1. बीमाकर्ता का नाम :
2. रजिस्ट्रीकरण संख्या :
1. रजिस्ट्रीकरण के प्रमाणपत्र की तारीख :
2. मूल प्रमाणपत्र किस प्रकार गुम, नष्ट या विकृत हुआ ?
3. फीस प्रेषण की विशिष्टियां :

आपका

स्थान :

तारीख :

मुख्य अधिकारी के हस्ताक्षर
(मुख्य अधिकारी का नाम)
(मुद्रा)

टिप्पण : 1. प्रमाणपत्र की दूसरी प्रति जारी करने के लिए बोर्ड के संकल्प की मूल प्रति संलग्न करें।

2. प्राधिकरण के मुख्य कार्यालय के स्थान पर संदेय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण के पक्ष में पाँच हजार रुपए का एक मांग ड्राफ्ट संलग्न करें।

प्रारूप बी.वि.वि.प्रा./द 5

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण

रजिस्ट्रीकरण के नवीकरण का प्रमाणपत्र

रजिस्ट्रीकरण संख्या :

रजिस्ट्रीकरण के नवीकरण की तारीख :

----- (बीमाकर्ता का नाम) का रजिस्ट्रीकरण, बीमा अधिनियम, 1938 की धारा 3क के अधीन वर्ष----- से ----- के लिए नवीकृत किया जाता है।

तारीख ----- 2000 को नई दिल्ली में जारी।

(प्राधिकारी की मुद्रा)

(प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता)

एन. रंगाचारी, अध्यक्ष

[सं. विज्ञापन-3/4/असाधारण/161/2000]

INSURANCE REGULATORY AND DEVELOPMENT AUTHORITY

NOTIFICATION

New Delhi, the 14th July, 2000

Insurance Regulatory and Development Authority (Registration of Indian Insurance Companies) Regulations, 2000

F. No. IRDA/Reg/7/2000.—

“In exercise of the powers conferred by section 114A of the Insurance Act, 1938 (4 of 1938) read with section 26 of the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999), the Authority, in consultation with the Insurance Advisory Committee, hereby makes the following regulations, namely:-

CHAPTER I

1. Short title and commencement.—(1) These regulations may be called Insurance Regulatory and Development Authority (Registration of Indian Insurance Companies) Regulations, 2000.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.—In these regulations, unless the context otherwise requires, -

(a) “Act” means the Insurance Act, 1938 (4 of 1938);

(b) “*Authority*” means the Insurance Regulatory and Development Authority established under sub-section (1) of section 3 of the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999);

(c) “*certificate*” means a certificate of registration granted or renewed by the Authority under these regulations;

(d) “*enquiry officer*” means an officer of the Authority or any person specifically appointed by it to conduct an enquiry for purposes of these regulations;

(e) “*general annuity business*” means the business of effecting contracts to pay annuities on human life but does not include contracts under pension business;

(f) “*health insurance business*” or “*health cover*” means the effecting of contracts which provide sickness benefits or medical, surgical or hospital expense benefits, whether in-patient or out patient, on an indemnity, reimbursement, service, prepaid, hospital or other plans basis, including assured benefits and long term care;

(g) “*Indian promoter*” means and includes---

(i) a company formed under the Companies Act, 1956 (1 of 1956), which is not a subsidiary as defined in section 4 of that Act;

(ii) a banking company as defined in subsection (4A) of section 2 of the Act but does not include a foreign bank or branch thereof functioning in India;

(iii) a Public financial institution as defined in section 4A of the Companies Act, 1956 (1 of 1956);

(iv) a co-operative society registered under any relevant law for the time being in force;

(v) a person, who is an Indian citizen or a combination of persons who are Indian citizens;

(h) “*infrastructure facility*” means ---

(i) a road, highway, bridge, airport, port, Railways including BOLT, road transport system, a water supply project, irrigation project, industrial parks, water treatment system, solid waste management system, sanitation and sewerage system;

(ii) generation or distribution or transmission of power;

(iii) telecommunication;

(iv) project for housing;

(v) any other public facility of a similar nature as may be notified by the Authority in this behalf in the Official Gazette;

(i) "*linked business*" means life insurance contracts or health insurance contracts under which benefits are wholly or partly to be determined by reference to the value of underlying assets or any approved index;

(j) "*non-linked business*" means life insurance contracts or health insurance contracts which are not linked business;

(k) "*pension business*" includes business of effecting contracts to manage investments of pension funds or superannuation schemes or contracts to pay annuities that may be approved by the Authority in this behalf;

(l) "*principal officer*" means any person connected with the management of the applicant or any other person upon whom the Authority has served notice of its intention of treating him as the principal officer thereof;

(m) All words and expressions used herein and not defined in but defined in the Insurance Act, 1938(4 of 1938), or in the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999), shall have the meanings respectively assigned to them in the those Acts.

CHAPTER II

3. Procedure for registration.---(1) An applicant desiring to carry on insurance business in India shall make a requisition for registration application in Form IRDA/R1.

(2) An applicant, whose requisition for registration application has been accepted by the Authority, shall make an application in Form IRDA/R2 for grant of a certificate of registration.

4. Classes of insurance business for which requisition for registration application may be made.---(1) An applicant shall make a separate requisition for registration application under regulation 3 for each class of business of insurance.

(2) The classes of business of insurance for which requisition for registration application may be made are :

(a) Life insurance business consisting of linked business, non-linked business or both;

or,

(b) general insurance business including health insurance business (or health cover).

5. Requisition for Registration Application.---(1) An applicant shall be eligible to apply for requisition referred to in sub-regulation (1) of regulation 3, if such applicant upon registration will be an Indian insurance company as defined in section 2(7A) of the Act:

Provided that the applicant whose,-

(i) requisition for registration application has been rejected by the Authority at any time during the preceding five financial years on the date of requisition for registration application; or

(ii) application for registration has been rejected by the Authority at any time during the preceding five financial years on the date of requisition for registration application; or

(iii) certificate of registration has been cancelled or withdrawn by the Authority; or

- (iv) name does not contain the words 'insurance company' or 'assurance company';

shall not be eligible to make a requisition for registration application under this regulation.

(2) Every requisition for registration application shall be accompanied by-----

(a) a certified copy of the memorandum of association and articles of association, where the applicant is a company and incorporated under Companies Act, 1956 (1 of 1956);

(b) the name, address and the occupation of the directors and principal officer;

(c) a statement of the class of insurance business proposed to be carried on;

(d) a statement indicating the sources that will contribute the share capital required under section 6 of the Act;

6. Furnishing of further information and clarification, etc.---(1) The Authority may require the applicant, which makes a requisition under regulation 3, to furnish further information or clarification regarding the matters relevant to consider the requisition for registration application.

(2) The applicant referred to in sub-regulation (1) of Regulation 5, if so required, may appear before the Authority through its principal officer.

7. Consideration of requisition for registration application.--- The Authority on being satisfied that---

(a) the requisition in Form IRDA/R1 is complete in all respects and is accompanied by all documents required therein;

(b) all information given in the Form IRDA/R1 is correct;

(c) the applicant will carry on all functions in respect of the insurance business including management of investments within its own organisation;

(d) the applicant submitting requisition for registration application---

(i) is a bona fide applicant for registration under section 3 of the Act;

(ii) will be in a position to comply with all the requirements for grant of certificate;

may accept the requisition and direct supply of the application for registration to the applicant.

8. Rejection of requisition for registration application.—(1) Where the requirements under regulation 7 are not complied with, the Authority may, after giving the applicant a reasonable opportunity of being heard, reject the application.

(2) The order rejecting the application under sub-regulation (1) shall be communicated by the Authority within thirty days of such rejection to the applicant in writing stating therein the ground on which the application has been rejected.

(3) An applicant aggrieved by the decision of the Authority under sub-regulation (2) may, within a period of thirty days from the date of such communication, apply to the Authority for reconsideration of its decision.

(4) The Authority shall consider the application made under sub-regulation (3) and communicate its decision, as soon as possible, in writing to the applicant.

9. Action upon rejection of application for requisition.—An applicant, whose requisition for registration application has been rejected, may approach the Authority with a fresh request for registration application after a period of two years from the date of rejection, with a new set of promoters and or for a class of insurance business other than the originally proposed one.

CHAPTER III

10. **Application for registration.**—(1) An applicant, whose requisition has been accepted, may make an application in Form IRDA/R2 for grant of certificate of registration.

(2) Every application shall be accompanied by---

- (a) documentary proof evidencing the making of deposit required under section 7 of the Act.
- (b) evidence of having rupees one hundred crore or more paid up equity share capital, in case the application for grant of certificate is for life insurance business or general insurance business;
- (c) evidence of having rupees two hundred crore or more paid up equity share capital, in case the application for grant of certificate is for re-insurance business;
- (d) an affidavit by the principal officer and the promoters of the applicant certifying that the requirements of the first proviso to section 6 of the Act to the effect that paid up share capital is adequate after excluding any preliminary expenses incurred in the formation and registration of the company and the deposit required to be made under section 7 of the Act have been satisfied;
- (e) a statement indicating the distinctive numbers of shares issued to each promoter and shareholder in respect of share capital of the applicant;
- (f) an affidavit by the principal officer and the promoters of the applicant certifying that the paid up equity capital referred to in sub-clause (b) of clause (7A) of section 2 of the Act, calculated is in accordance with regulation 11 does not exceed twenty six percent;
- (g) a certified copy of the published prospectus, if any;
- (h) a certified copy of the standard forms of the insurer and statements of the assured rates, advantages, terms and conditions to be offered in connection with insurance policies together with a certificate by an actuary in case of life insurance business that such rates, advantages, terms and conditions are workable and sound;
- (i) a certified copy of the memorandum of understanding entered into between the Indian promoter and the foreign promoter, if any, or amongst the

- promoters as a whole including details of the support comfort letters exchanged between the parties;
- (j) the original receipt showing payment of the fee of rupees fifty thousand for a class of business;
 - (k) a certificate from a practising chartered accountant or a practising company secretary certifying that all the requirements relating to registration fees, share capital, deposits, and other requirements of the Act have been complied with by the applicant;
 - (l) any other information required by the Authority during the processing of the application for registration.

11. Manner of calculation of twenty six per cent. equity capital held by a foreign company.—

- (1) For the purposes of the Act and these Regulations, the calculation of the holding of equity shares by a **foreign company either by itself or through its subsidiary companies or its nominees** (*hereafter referred to as foreign investor*) in the applicant company, shall be made as under and shall be aggregate of:-

- (i) the quantum of paid up equity share capital held by the foreign company either by itself or through its subsidiary companies or nominees in the applicant company;
- (ii) the quantum of paid up equity share capital held by other foreign investors, non-resident Indians, overseas corporate bodies and multinational agencies in the applicant company; and
- (iii) the quantum represented by that proportion of the paid up equity share capital to the total issued equity capital of an Indian promoter company mentioned in sub-clause (i) of clause (g) of regulation 2 held or controlled by the category of persons mentioned in sub-clauses (i) and (ii) of this sub regulation.

Explanation: For purposes of calculation referred to above, account need not be taken of the holdings of equity in an Indian promoter company held by foreign institutional investors, other than the foreign promoters of the applicant and their subsidiaries and nominees, and Indian mutual funds to the extent the investment of foreign institutional investors and Indian mutual funds are within the approved limits laid

down by the Securities and Exchange Board of India under its rules, regulations or guidelines issued from time to time.

(2) Every insurer who has been granted registration under the Act shall, within 15 days of the end of every quarter, furnish to the Authority a statement indicating changes exceeding 1% of the issued capital in the holding of the shares in his company and those of the promoter.

(3) Interpretation : The interpretation of this regulation will be that of the Authority, whose decision on all issues will be binding on all applicants/insurers and will be final.

12. Consideration of Application.-(1) The Authority shall take into account for considering the grant of certificate, all matters relating to carrying on the business of insurance by the applicant.

(2) In particular and without prejudice to the generality of the foregoing without in any manner affecting its freedom, the Authority shall consider the following matters for grant of certificate to the applicant, namely:-

(a) the record of performance of each of the promoters in the fields of business/profession they are engaged in;

(b) the record of performance of the directors and persons in management of the promoters and the applicant;

(c) the capital structure of the applicant company;

(d) the extent of obligation to provide life insurance or general insurance policies to the persons residing in the rural sector, workers in the unorganised sector or informal sector or for economically vulnerable or backward classes of the society and other categories of persons specified by the Authority;

(e) the nature of insurance products;

(f) the planned infrastructure of the applicant company, including branches in rural areas, to effectively carry out the insurance business;

(g) the level of actuarial and other professional expertise within the management of the applicant company;

(h) the organisation structure of the applicant to meet the requirements of regulation 7(c).

(i) other relevant matters for carrying out the provisions of the Act.

(3) The Authority shall give preference in grant of certificate of registration to those applicants who propose to carry on the business of providing health covers to individuals or groups of individuals.

13. Rejection of application for registration.—(1) Where an application for registration is not complete in all respects and does not conform to the regulations or instructions specified in Form IRDA/R2, and after considering matters referred to in regulations 12 and 16 and on being satisfied that it is not desirable to grant a certificate by the Authority, by an order, may reject the application.

(2) The order rejecting the application under sub-regulation (1) shall be communicated by the Authority within thirty days of such rejection to the applicant in writing stating therein the ground on which the application has been rejected.

(3) An applicant aggrieved by the decision of the Authority under sub-regulation (2) may, within a period of thirty days from the date of such communication, appeal to the Central Government in accordance with sub-section (2C) of section 3 of the Act, for reconsideration of such decision.

(4) The decision of the Central Government on such appeal shall be final and shall not be questioned before any Court.

(5) The fees, referred to in clause (j) of sub-regulation (2) of regulation 10, shall not be refunded.

14. Effect of rejection of application for registration.—An applicant, whose application for registration has been rejected shall not be entitled to a certificate:

An applicant may approach the Authority with a fresh request for registration after a period of two years from the date of rejection, with a new set of promoters and or for a class of insurance business other than the originally proposed one:

15. Manner of payment of fee for registration.— The fee of rupees fifty thousand for each class of business for registration shall be remitted by a bank draft issued by any scheduled bank in favour of the Insurance Regulatory and Development Authority payable at New Delhi.

16. Grant of certificate of registration.— The Authority, after making such inquiry as it deems fit and on being satisfied that —

- (a) the applicant is eligible, and in its opinion, is likely to meet effectively its obligations imposed under the Act;
- (b) the financial condition and the general character of management of the applicant are sound;

- (c) the volume of business likely to be available to, and the capital structure and earning prospects of, the applicant will be adequate;
- (d) the interests of the general public will be served if the certificate is granted to the applicant in respect of the class of insurance business specified in the application; and
- (e) the applicant has complied with the provisions of sections 2C, 5, 31A 32 and 32A has fulfilled all the requirements of these sections applicable to him,

may register the applicant as an insurer for the class of business for which the applicant is found suitable and grant him a certificate in Form IRDA/R3.

17. An applicant granted a certificate of registration under the Regulations shall commence insurance business for which he has been authorised within 12 months of the date of registration.

Provided, however, that if the company feels that it will not be able to commence the insurance business within the specified period of 12 months, it can before the time limit expires, seek an extension, by a proper written application, to the Authority.

18. The Authority on receipt of the request referred to in Regulation 17 will examine it and communicate its decision in writing either rejecting the request or granting it.

19. No extension of time shall be granted by the Authority beyond 24 months from the date of grant of registration under Regulation 16.

CHAPTER IV

20. Manner of renewal of certificate. – (1) An insurer, who has been granted a certificate under section 3 of the Act, shall make an application in Form IRDA/R5 for the renewal of the certificate to the Authority before the 31st day of December each year, and such an application shall be accompanied by evidence of the payment of the fee which shall be the higher of,---

- (a) fifty thousand rupees for each class of insurance business, and
- (b) one-fifth of one per cent. of total gross premium written direct by an insurer in India during the financial year preceding the year in which the application for renewal of certificate is required to be made, or rupees five crores, whichever is less; (and in the case of an insurer carrying on solely re-insurance business, instead of the total gross premium written direct in India, the total premium in respect of facultative reinsurance accepted by him in India shall be taken into account)

(2) If the insurer fails to apply for the renewal of registration before the date specified in sub-regulation (1), the Authority may accept an application for renewal of registration on receipt of the fee payable with the application along with an additional fee by way of penalty of ten per cent. of the fee payable with the application.

21. Manner of payment of fee for renewal of certificate.— The fee for renewal of certificate shall be paid to the account of Insurance Regulatory and Development Authority with the Reserve Bank of India.

22. Issue of duplicate certificate.—The Authority may, on receipt of fee of rupees five thousand, issue a duplicate certificate to an insurer, if the insurer makes an application to the Authority in Form IRDA/R4.

CHAPTER – V

PROCEDURE FOR ACTION IN CASE OF DEFAULT

23. Suspension of certificate.— Without prejudice to any penalty which may be imposed or any action taken under the provisions of the Act, the registration of an Indian insurance company or insurer who ---

- (a) conducts its business in a manner prejudicial to the interests of the policyholders;
- (b) fails to furnish any information as required by the Authority relating to its insurance business;
- (c) does not submit periodical returns as required under the Act or by the Authority;
- (d) does not cooperate in any inquiry conducted by the Authority;
- (e) indulges in manipulating the insurance business;
- (f) indulges in unfair trade practices;
- (g) fails to make investment in the infrastructure or social sector specified under sub-section (1A) of section 27D of the Act,

may be suspended for a class or classes of insurance business for such period as may be specified by the Authority by an order;

Provided that the Authority for reasons to be recorded in writing may, in case of repeated defaults of the type mentioned above, impose a penalty of cancellation of certificate.

24. Manner of making order of suspension or cancellation of certificate.— No order of suspension or cancellation shall be imposed except after holding an enquiry in accordance with the procedure specified in these regulations.

25. Manner of holding enquiry before suspension or cancellation.—(1) For the purpose of holding an enquiry under regulation 24, the Authority may appoint an enquiry officer.

(2) The enquiry officer shall issue to the insurer a notice at the registered office or the principal place of business of the insurer.

(3) The insurer may, within thirty days from the date of receipt of such notice, furnish to the enquiry officer a reply, together with copies of documentary or other evidence relied on by it or sought by the Authority from the insurer.

(4) The enquiry officer shall give a reasonable opportunity of hearing to the insurer to enable it to make submissions in support of its reply made under sub-regulation (3).

(5) Before the enquiry officer, the insurer may either appear in person or through any person duly authorised by the insurer:

Provided that no advocate shall be permitted to represent the insurer at the enquiry:

Provided further that where an advocate has been appointed by the Authority as the presenting officer under sub-regulation (6), it shall be lawful for the insurer to present its case through an advocate.

(6) If it is considered necessary, the enquiry officer may ask the Authority to appoint a presenting officer to present its case.

(7) The enquiry officer shall, after taking into account all relevant facts and submissions made by the insurer, submit a report to the Authority and recommend the penalty to be awarded as also the justification of the penalty proposed.

26. Show-cause notice and order.---(1) On receipt of the report from the enquiry officer, the Authority shall consider the same and if considered necessary by it, issue a show-cause notice as to why a penalty as it considers appropriate should not be imposed.

(2) The insurer shall, within twenty-one days of the date of receipt of the show-cause notice, send a reply to the Authority.

(3) The Authority after considering the reply to the show-cause notice, if received, shall as soon as possible but not later than thirty days from the receipt of the reply, if any, pass such orders as it deems fit. If no reply is furnished to the Authority by the insurer within 90 days of the service of the notice, the Authority can proceed to decide the issue ex-parte.

(4) An order passed under sub-regulation (3) shall give reasons therefor including justification of the penalty imposed by that order.

(5) The Authority shall send a copy of the order made under sub-regulation (3) to the insurer.

27. Effect of suspension or cancellation of certificate.--- On and from the date of suspension or cancellation of the certificate, the insurer shall cease to transact new insurance business:

28. Publication of order.--- The order of the Authority passed under sub-regulation (3) of regulation 26, shall be published in at least two daily newspapers in the area where the insurer has his principal place of business.

CHAPTER VII

PROVISIONS APPLICABLE TO EXISTING INSURERS

29. Registration of existing insurers.—(1) Every insurer carrying on insurance business in India before the commencement of the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999) and requiring registration under the Act, shall make an application, in Form IRDA/R2 for grant of certificate of registration, within three months from the commencement of the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999).

(2) Every application shall be accompanied by---

(a) original certificate of registration;

(b) a confirmation that the requirements of section 7 of the Act have been met;

(c) evidence of having rupees one hundred crore or more paidup share capital, in case the application for grant of certificate of registration is for life insurance business or general insurance business;

(d) evidence of having rupees two hundred crore or more paidup share capital, in case of an application for grant of certificate of registration for re-insurance business;

(e) an affidavit by the principal officer of the applicant certifying that the requirements of section 6 of the Act have been complied with;

(f) a certified copy of the standard forms of the insurer and statements of the assured rates, advantages, terms and conditions to be offered in connection with insurance policies together with a certificate in case of life insurance business by an actuary that such rates, advantages, terms and conditions are workable and sound;

(g) the original receipt showing payment of fee of rupees fifty thousand for each class of business;

(h) any other information required by the Authority during the processing of the application for registration.

(3) The Authority shall register every applicant, who submits an application in accordance with sub-regulation (2), and grant a certificate in Form IRDA/R3.

30. Transitory Provisions.--- Every existing insurer shall be required to comply with all the Regulations made by the Authority from the date of their notification:

Provided that the Regulations made by the Authority on the following subjects viz:-

- (i) Accounts;
- (ii) Assets, liabilities and solvency margin;
- (iii) Reinsurance;

may, at the choice of an existing insurer, be complied with within a period of twelve months from the commencement of those regulations:

Provided, however, the Authority may, on an application made to it by an existing insurer, for valid reasons, grant a further period of time to comply with the above regulations so, however, that the total time taken by an existing insurer to comply with regulations in the areas mentioned above does not extend beyond twenty-four months from the date(s) of commencement of those regulations.

Provided further that where an existing insurer does not conform to the regulations in the areas mentioned above within the time allowed to him under this regulation, the Authority shall proceed against him for failure to comply with its directions.

Notwithstanding the above, nothing prevents the Authority from seeking information from an existing insurer on the subjects mentioned in the first proviso to this regulation and issue directions to an insurer, wherever necessary.

FORM IRDA/R1**[REQUISITION FOR REGISTRATION APPLICATION]**

[Please see regulation 5 of Insurance Regulatory and Development Authority (Registration of Indian Insurance Companies) Regulations, 2000]

(This form is supplied free of cost to the applicants by the Insurance Regulatory and Development Authority. Please fill in the application carefully. Should you require any clarifications, please write to the Authority specifically mentioning your query or call on us personally subject to prior appointment)

1. Name of the applicant
2. Address:
3. Date of incorporation as a Company: [DD/MM/YYYY]
4. Registration No. (issued by the Registrar of the Companies)
5. State the classes of insurance business for which registration is sought:
6. Amount of Authorised capital & Face value of shares and their numbers.
7. Amount of Paid up Capital & Number of equity shares:
8. Classification of Shares
9. Voting Rights of each class of Shareholders
10. Details of shareholders: [Please give full name, address, percentage of holding in the paid up capital of the insurer, Occupation, Qualifications and Experience, Number of shares held and Percentage of share capital in the company] Please attach separate sheets if necessary. Details of persons holding more than 1% of the issued capital of the applicant and promoters are to be given in separate statements.

Full Name [first,middle, surname]	Date of Birth	Address with Telephone Nos., Fax Nos., E-mail	Qualificatio ns	Experienc e	Present occupatio n	No. of equity (voting rights) shares and percentage of total holding	Remarks
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
Mr./Ms.							

Note: If the promoter is a company or a body corporate registered in India or in a foreign country, give the name of the company or body corporate in column (1), the country of incorporation and the date of registration in column (2), mention the areas of operation of the company in col.(5), leaving the columns 4 and 6 blank; particulars indicating the countries of operation, nature of

business enclosing statements of accounts of the company or body corporate for the last 5 years are to be given. If there are more than one promoter, the information may kindly be furnished in such a manner as to indicate clearly the inter-relationship, if any, of parties. If a promoter is a nominee of another, details of the principal in the above areas are to be given. Adequate care may be taken to furnish full and complete information truthfully. Any misrepresentation found later will lead to disqualification of the applicant, its promoters and others connected thereto.

If the total required Capital has not yet been issued, please provide information on the expected subscriptions to shares and whether the potential shareholders have given any commitment or assurance to subscribe to the capital.

11. Applicant: This section should set out the background information. Following information should be included:

- Particulars of the partners in the joint venture (e.g. company name, address, names of directors, etc.).
- Constitution of the promoter companies – details of shareholders holding in excess of 1% of the paid up capital.
- Nature of business, years in business of promoter companies.
- Past record of regulatory interventions/restrictive directions in respect of promoter companies.
- The applicant's reasons for entering the insurance market.
- Financial statements for the last five years. Strengths of the partners.
- Indication of the degree of commitment to the Indian market place displayed by the applicant.
- The Agreement among the shareholders promoting the company.
- The obligations undertaken by the foreign promoters.
- The obligations of the applicant company to the foreign promoters.
- Sources for meeting the initial and future capital needs.
- In cases of non-corporate promoters, information on the above lines, suitably modified, may be given.

Promoters (Separate statements for Indian promoters and foreign promoters, if any, are to be given).

Details of promoters: [Please give full name, address, percentage of holding in the paid up capital, Occupation, Qualifications and Experience, Number and Percentage of share capital in the company]

Full Name [first, middle, surname]	Date of Birth	Address with Telephone Nos., Fax Nos., E-mail	Qualifications	Experience	Present occupation	No. of equity (voting rights) shares and percentage of total holding	Remarks

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
Mr./Ms.							

If the promoter is a company or a body corporate registered in India or in a foreign country, give the name of the company or body corporate in column (1), furnish the date of registration in column (2), mention the areas of operation of the company in col. (5), leaving the columns 4 and 6 blank. The particulars of persons nominated by such promoter in the above *pro forma*; and particulars indicating the countries of operation, nature of business enclosing statements of accounts of the company or body corporate for the last 5 years should also be provided.

12. The Applicant Company

This section should provide the key aspects of the Company. This will cover the following:

- Name of the applicant Company.
- Date of Registration.[DD/MM/YYYY]
(As per Companies Act, 1956)
- Registration Number:
- Registered Office Address:
- Head Office Address:
- Address for Communications (state the name of the Company Secretary, telephone numbers, fax numbers, mobile number, e-mail address and such other details:
- Key aspects of the promoters (e.g. respective shareholdings, roles and responsibilities, directorships, inter-relationships et.).
- Particulars of the Board of Directors:
- States of operation. Branch locations. (Proposed)
- Company's Mission Statement.
- Senior management (key persons) and allocation of responsibilities.(Proposed)
- Organizational structure. Reporting relationships.
- Allocation of responsibilities between the head office and the operational units.

[Enclose four certified copies of Memorandum and Articles of Association of the registered company]

13. Capital structure

- ☐ Amount of Authorised capital & No. of Shares:
- ☐ Classification of Shares
- ☐ Amount of Issued Capital & No. of Shares:
- ☐ Amount of Paid up Capital & No. of Shares:
- ☐ Voting Rights attached to each class of Shares
- ☐ Nominal/Face value of Each Equity Share/ Other Share:

14. Directors and key persons:

For each director and key Directors and key persons, furnish the particulars in the pro forma given below:-

- ☐ Name (and any previous names)
- ☐ Private and Business Address (including any other private addresses within the last 15 years), current Telephone, Fax and E-mail Addresses:
- ☐ Date and Place of Birth
- ☐ Nationality (and any previous Nationality)
- ☐ Passport / Identity Card.
 - Number
 - Date and Place of Issue:
 - Date of expiry
 - Issuing Authority:
- ☐ Name and Address of Bank:
 - Account Numbers and Type of Account:
 - Details of any loans or guarantees issued to or on behalf of the company in which the Directors and key persons have a management or shareholding interest
- ☐ Family Status
- ☐ Details and Dates of Academic Qualification:
- ☐ Details and Dates of Professional Qualification:
- ☐ Description of the prospective position (including responsibilities) and proposed date of commencement:
- ☐ Working Experience:
 - Existing and Previous Employers (covering last 15 years)
 - Details of whether the Directors and key persons and / or their Employers have been formally supervised or regulated
 - Nature of Employer's Business
 - Designation: (including duties and responsibilities)
 - Date of Appointment
 - Date of Resignation/Departure
 - Details of Other Business interests in the last 15 years where the Directors and key persons have been a working shareholder, director or controller.
- ☐ Relationship with the Company or related Companies or other third parties:-
 - Details of shareholdings or voting powers in the company, or related Companies or third parties:
 - Details of any Business relationships with the company or related Companies or third parties:
 - Details of any Business relationships between the Directors' and key persons' former employers and the company or related Companies or third parties:
- ☐ Full details on the Directors' and key persons' reputation and character:-
 - whether the applicant has ever been declared bankrupt;
 - any convictions of any offence involving fraud or other dishonesty;
 - any disqualification of the Directors and key persons from acting as a director or in the management of any company or organisation;

- whether the Directors and key persons have ever been refused (or had revoked) a licence or authorisation to carry on any regulated financial business;
- ☐ Any censure or disciplinary action initiated by any government, regulatory or professional body;
 - ☐ Any dismissals from office or employment, subjection to disciplinary proceedings by the Directors' and key persons' employer or been refused entry to any profession or occupation;
 - ☐ Any litigation with which the Directors and key persons have been involved over the last 5 years;
 - ☐ Whether any governmental, regulatory or professional body has ever investigated any employer, company or organisation with which the Directors and key persons have been associated as a director, officer, manager or shareholder;
 - ☐ Whether any company or organisation with which the Directors and key persons were associated as a director, officer, manager, shareholder or controller has ever been wound up, gone into receivership or ceased trading either whilst the Directors and key persons was associated with it or within one year after the Directors and key persons so ceased to be associated.

In the Remarks column, please mention whether any director is an agent, broker, intermediary, director or employee of any other insurance company (or reinsurer) in India or in any foreign country or director of any other company in India or in any foreign country.

For these purposes, "Key persons" will include the Chief Executive, Chief Marketing Officer, Appointed Actuary, Chief Investment Officer, Chief of Internal Audit and Chief Finance Officer.

15. External Auditors:(Proposed)

Full Name [first,middle, surname]	Date of Birth	Address with Telephone Nos. Fax Nos. E-mail	Date of Appointme nt	Experience in auditing insurance companies	Period of appointment	No. of equity (voting rights) shares and percentage of total holding in the applicant company	Remarks
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)

If auditors are a firm, state the name of the firm in Col (1), its date of registration in Col (2)

Note: In choosing external statutory auditors, the applicant may be guided by the Regulations for Preparation of Financial Statements and Auditors Report of Insurance Companies, more particularly those dealing with appointment of auditors.

16. Business to be transacted:

Describe the insurance business to be transacted.

17. Where in the country do you wish to carry on insurance business? (tick the boxes)

(a) Regions: ☐ North ☐ South ☐ East ☐ West ☐ Central

(b) Metropolitan cities: ☐ Mumbai ☐ Chennai ☐ Delhi ☐ Calcutta

(c) Concentration: : ☐ Rural ☐ Urban ☐ Both Rural & Urban

18. Distribution Channels: ☐ Direct ☐ Tied Agents ☐ Brokers/Intermediaries
☐ Others

19. Financial Projections (Both for Life and general insurance – depending on the class applied for registration)

A description of the model used for financial projections should be provided, based on assumptions, for a period of 5 years, for each year from the start. These should set out the following:

- Size of sales force.
- Amount of sales.
- Size of sales support and administrative staff.
- Premium income.
- Investment income.
- Commissions and other sales related expenses.
- Expenses of administration.
- Income tax and other taxes.
- Statutory reserves.
- Required solvency margins.
- Profit and loss accounts and balance sheets.
- First year and renewal expense ratios.
- Capital needs.—Indian and Foreign
- Break-even periods and the Return on Capital.
- Shareholder dividends: Indian and Foreign.
- Policyholder surpluses and bonus declarations

This section should also discuss the manner in which the future capital needs will be met.

20. Sensitivity Analysis (Life)

The analysis set out in para 19 above will be based on a base scenario and a few alternate scenarios. Sensitivity analysis based on “Optimistic” and “Pessimistic” assumptions should also be included. These will relate to assumptions such as:

- Size of sales force.
- Volume of sales.
- Average size of sale.
- Levels of mortality/morbidity, policy terminations.
- Administrative expenses (including inflation).

- Future investment conditions.

A discussion on the manner in which the outcome of the pessimistic scenarios will be handled should be included.

21. Rural Business

Legislation requires that a specified percentage of the new business should be undertaken in the rural or social sector. The manner in which this requirement will be fulfilled should be described. For the purpose of this section, please see the relevant regulations covering this area.

22. Obligations in unorganised sector and backward classes

In addition, insurers shall discharge obligations in respect of unorganised sector to cover risks of economically vulnerable sections of the society and backward classes. For the purpose of this section, please see the relevant regulations covering this area.

The manner in which these requirements are proposed to be met should be described in detail.

23. Particulars of Previous Application: Has the applicant ever applied for license in India or outside India? If so, give particulars.

24. Conclusion In conclusion, the report should discuss the viability of the operations. Any special issues or concerns should also be indicated.

Certification

I, the undersigned, solemnly declare that the facts given in this application form on behalf of the Applicant Company, are true and that the projections and estimations are based on reasonable assumptions.

Place

Date:

Signature of the Authorised person (*with seal*)

FORM IRDA/R2***APPLICATION FOR REGISTRATION***

[Please see regulation 10 of Insurance Regulatory and Development Authority (Registration of Indian Insurance Companies) Regulations, 2000]

(This form is supplied free of cost to the applicants by the Insurance Regulatory and Development Authority. Please fill in the application carefully. Should you require any clarifications, please write to the Authority specifically mentioning your query or call on us personally subject to prior appointment)

1. Geographic Spread: Give the addresses of the administrative offices in each State and Union Territory in India, overseas, and also in Rural Areas with the name of person in charge of the office. [if the applicant has not decided, he might give the proposed number and locations of administrative offices in each State and Union Territory in India, overseas, and also in Rural Areas]

2. Market Research and Analysis

The company may have undertaken some form of market analysis to ascertain the market potential, consumer needs, target market, product potential, etc. (in particular health insurance segment). Full description of the research, along with the conclusions reached.

3. Products to be Sold

Based on the market research and analyses undertaken, the partners would have decided upon the products to be marketed -- individual or group insurance. The description should include the following:

- Description of the product features,
- The target markets where the products will be sold.
- Specification of the names of the products in life/general insurance, linked/non-linked, health insurance.

4. Distribution

This section should describe how the products will be or are proposed to be distributed. This should cover the following:

- The channels of distribution to be used, with an indication on the relative degrees of importance placed on each of the channels.
- The distribution network that will be set up in the market place.
- Any limitations on the products to be sold by any of the channels.
- Remuneration to be paid to each channel of distribution.

5. Sales Promotion

The approach to be used for advertisement and sales promotion, e.g. the media to be used, frequency, etc. Copies of sales material, literature advertising the product, if any, should be provided.

6. Underwriting

This section should describe the approach used for underwriting of proposals; the arrangements made for medical and other reports, etc.

Please also state the nature of support to be provided in underwriting and in training of underwriters by the foreign promoters.

7. Investments

Each company will have established its investment philosophy that will be appropriate for the products it intends to market. This should be described. Other information should include the investment personnel, investment adviser (if outsourced), location of the investment operations, investment brokers to be used, etc. Regulations regarding Investment, Valuation, Exposure – Prudential – Provisioning Norms- Life & Non Life issued by the Authority may be taken into account.

8. Information Technology

Insurance industry is very much dependent on computer technology. Full description should be provided for the following:

- The different areas where computer systems will be employed.
- Whether the systems will be bought off the shelf (with some customization), developed locally or imported into India by the foreign promoter (with some customization).
- The degree to which the systems will be used for policyholder servicing.
- The degree of interconnectivity of the systems.
- A description of how the I/T systems will be used to develop the required Management Information Systems.
- Extent of procedures and operations which will remain manual.

9. Customer Service

Customer service could be provided either centrally through the head office or decentralized to the branch offices/operational units. The degree to which customer service is planned to be decentralized to the branch offices should be described. The service standards planned to be introduced for the various aspects of customer service should be described. Any plan to introduce “call-centres” or customized grievance settlement machinery may be indicated.

Mention the time schedule for various types of service offered by the Company.

10. Retention Limits and Reinsurance

The nature of reinsurance arrangements should be described fully, giving the following details:

- The name(s) of reinsurer(s).
- The basis of reinsurance.
- Terms of reinsurance.

The manner in which the retention limit(s) have been established should be discussed.

11. Recruitment and Training

Different areas of the company require personnel with different skill sets. These personnel will include agents, sales supervisors, branch managers, administrative staff for various departments, etc. Some of the departments will require special technical skills (e.g. underwriting, actuarial, accounting, sales, information technology, etc.). This section should set out the following information for each of the categories:

- Desirable skill sets.
- Sources for recruitment.
- Approach to be used for training—in house /outsource.

12. Internal Controls

The company will need to establish a set of procedures and norms for various activities. The manner in which these will be monitored should be described. These activities will relate to underwriting and policy issue, customer service, investments, accounting, new product pricing, computation of reserves and Required Solvency Margins, regulatory compliance, claim processing and settlement procedures, etc.

13. Expenses of Administration

Life:

In arriving at the premium rates, the Appointed Actuary will need to build the estimated expense levels into the premium calculations. The manner in which the expenses of administration have been estimated and converted into average factors should be described. These expenses will have to be distinguished between first year and renewal, fixed and variable. All overhead expenses will also have to be covered.

General:

The proposes expenses as a per cent. of premium at levels of operational offices and each level of supervisory offices and head office.

14. New Product Pricing**Life:**

The financial projections will incorporate the sale of planned products. A description of these products to the extent possible should be provided. This should include the following:

- The product features, such as coverage periods, premium levels, non-forfeiture values, loan provisions, etc.
- Distribution channels to be used.
- Commission scales.
- Average policy size.
- Reserving method used.
- The levels of the various parameters built into the computations. These will relate to mortality, policy terminations, expenses, interest and any other parameters that may be relevant for the product. The values of these parameters will have to be specified at two levels - at the Expected level and at a level inclusive of the Margins for Adverse Deviations. The justifications for both levels should be provided.
- Profitability criteria used in product pricing.

General:

In respect of products not governed by market tariffs, please indicate how the products will be priced, the data base which will be used to determine premium bases and the terms and conditions, the statistical system which will be established to review adequacy of rates.

15. Information Policy: Mention the Company's policy regarding insurance awareness in the public.

16. Premium Rates: Enclose the Company's Premium Tables for the products along with rebates, if any, offered.

Certification

I, the undersigned, solemnly declare that the facts given in this application form on behalf of the Applicant Company, are true and that the projections and estimations are based on reasonable assumptions.

Place

Date:

Signature of the Authorised Person (with Seal)

FORM IRDA/R3**INSURANCE REGULATORY AND DEVELOPMENT AUTHORITY**

(Seal of the Authority)

CERTIFICATE OF REGISTRATION

Registration Number. _____

This is to certify that (Name of Insurer and his address)

has this day been registered in accordance with the provisions of sub-section (2A) of section 3 of the Insurance Act, 1938 (IV of 1938) to transact the classes of business specified in the Schedule below.

Given under the seal of the Authority at *New Delhi*

this _____ day of _____
two thousand and _____

INSURANCE REGULATORY AND DEVELOPMENT AUTHORITY

Schedule

Classes of business which may be transacted:--

1. _____
2. _____
3. _____
4. _____

FORM IRDA/R4**ISSUE OF DUPLICATE CERTIFICATE OF REGISTRATION. .**

An insurer shall apply in the following format with the documents specified herein:

To
Insurance Regulatory and Development Authority.
New Delhi

Application for issue of duplicate certificate of registration. .

We request you to issue a duplicate certificate of registration for which we give below the following details:

1. Name of Insurer:
2. Registration Number:
 1. Date of Certificate of Registration:
 2. How original certificate has been lost, destroyed or mutilated?
3. Particulars of remittance of fee.

Place

Yours truly,

Date:

Signature of the principal officer.
(Name of the principal Officer)
(Seal)

Notes: 1. Enclose the original copy of the resolution of the board for the issue of duplicate certificate, in duplicate.
2. Enclose a DD for Rupees five thousand drawn in favour of Insurance Regulatory and Development Authority payable at the place of head office of the Authority.

FORM IRDA/R5**INSURANCE REGULATORY AND DEVELOPMENT AUTHORITY*****CERTIFICATE OF RENEWAL OF REGISTRATION***

Registration Number:

Date of Renewal of Registration:

The certificate of registration of

(Name of Insurer)

is hereby renewed under section 3A of the Insurance
Act, 1938, for the year to

Issued at New Delhi on day of 2000.

(Seal of the Authority.)

(Authorised Signatory)

N. RANGACHARY, Chairperson

[No. ADVT.-3/4/Exty/161/2000]